Notes

M A History (Semester 4th)

Paper Code :21HIS24GD-4

Economic History of India -II

(1757-1947)

Index

1. भारत में वित्तीय पूंजीवाद पर एक निबंध लिखिए

2. ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन बंगाल की आर्थिक स्थिति का वर्णन कीजिए

3.1857 तथा पर विश्व युद्ध के मध्य भारत में व्यापार वृद्धि तथा उसकी प्रकृति की व्याख्या कीजिए

4.ब्रिटिश सरकार की शुल्क नीति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए

5. औपनिवेशिक शासन के दौरान नई शहरी केंद्रो के विकास पर एक आलोचनात्मक निबंध लिखिए

6. ब्रिटिश भारत में आधुनिक उद्योगों के विकास पर लेख लिखिए

7.औपनिवेशिक काल में भारत में डाक तथा टेलीग्राफ़ के विकास पर प्रकाश डालिए

8. दादा भाई नौरोजी के अनुसार धन की निकासी किस-किस तरह से हुई

9. ब्रिटिश शासन काल में प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली के विकास का वर्णन कीजिए

10. आधुनिक काल में पर्यावरण आंदोलन पर प्रकाश डालिये

11.भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश राज्य की परिणामों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए

प्रश्न 1.भारत में वित्तीय पूंजीवाद पर एक निबंध लिखिए

Ans. भारत में विदेशी पूंजी का कितना निवेश था कई विद्वानों का मत है कि समस्त विश्व में विनियोजित ब्रिटिश पूंजी का केवल **14** परसेंट एशिया में आया और **40** परसेंट ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में **1854** से **70** के बीच **15** करोड़ पोड शटरिंग का विनियोजन भारत में किया गया था जिसका अधिकतर भाग रेलवे में लगा हुआ था **1857** से पहले भारत से धन संपदा ब्रिटेन को जाती थी भू राजस्व कंपनी के कर्मचारी व अधिकारियों के वेतन एवं भत्ते सेवा के खर्च आदि के नाम पर वसूल किए जाने वाले धन आदि से भारत का शोषण किया जाता था लेकिन **1858** के बाद भारत में तक शासन स्थापित हो गया अब भारत से धन का निकास तो होता रहा परंतु उसे धन से अंग्रेजों ने स्वार्थवास कुछ धन भारत में निवेश करना शुरू कर दिया उन्होंने इस पूंजी का निवेश भारत का शोषण करने के लिए ही किया था **19**वीं शताब्दी में ब्रिटिश पूंजी में विदेशी पूंजी का हस्तक्षेप भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ता चला गया वैसे भी विदेशी पंछी को घरेलू पूंजी से कोई खतरा नहीं था ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजों ने भारत को खूब लूटा और इसका शोषण किया इनके द्वारा लूट गया धन भारत पर ही विनिवेश करने का निर्णय लिया ब्रिटिश सरकार ने भारत में ब्रिटिश पूंजी के निवेश पर सभी तरह की सुरक्षा एवं संरक्षण की प्रदान नहीं किया बल्कि इस बात के सभी प्रयास किए गए कि ब्रिटिश टूरिस्ट के पर्याप्त लाभ भी प्राप्त हो अंग्रेजों द्वारा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्र में पूंजी के निवेश

1. **रेलवे बंदरगाह संचार जहाजरानी विद्युत आदि**

2. बागान उद्योग जैसे चाय कॉफी मिल कपास आदि

3. खनिज एवं पेट्रोल आदि

4. बैंकिंग की व्यापार आदि

5. घरेलू बाजार की आवश्यकता हेतु उद्योग

कुल विदेशी पूंजी निवेश. अंग्रेजों द्वारा **19**वीं शताब्दी की उत्तरार्ध में भारत में पूंजी निवेश प्रारंभ किया गया इन्होंने भारत से ही ल खसोट की हुई पूंजी को यहां पर निवेश किया कई विद्वानों ने कहा है कि इस विदेशी पूंजी नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह पूंजी भारत से ही अर्जित की थी यह पूंजी ब्रिटेन जाने के बाद भारतीयों का इस पर कोई अधिकार नहीं रह गया था **1859** तक भारत में कुल विदेशी पूंजी का निवेश **1500** लाख पाउंड था **1896** में भारत में विदेशी पूंजी का निवेश **294** मिलियन पॉइंट था **1909** से **10** में भारत में **3660** लाख फोन शटलिंग की ब्रिटिश पूंजी लगी हुई थी जॉर्ज स्पाइस ने बताया कि **1909** तक भारत एवं श्रीलंका में लगभग **3650** लाख फोन की पूंजी लगा चुके थे लेकिन भारत में ब्रिटिश पूंजी निवेश के जो आंकड़े प्राप्त होते हैं उनमें एकरूपता नहीं थी फिर भी इसमें भारत में विनियोजित ब्रिटिश पूंजी का अनुमान लगाया जा सकता है **19**वीं शताब्दी में भारतीय उद्योगों में विदेशी पूंजी का निवेश करने के बराबर था ब्रिटिश ने भारत को लगभग आधी पंजीकरण के तौर पर दे रखी थी **39%** पूंजी रेल कंपनियों में लगी हुई थी जिस पर **5%** ब्याज मिलता था बागान उद्योग पर **7%** पेट्रोल कोयला आदि पर **2%** ब्रिटिश पूंजी लगी हुई थी प्रथम विश्व के समाप्त होने के बाद घनश्याम दास बिरला किडनी साइरस

विदेशी पूंजी के भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव. भारत में विदेशी पूंजी निवेश के भारतीय अर्थव्यवस्था पर जो प्रभाव पड़े वह निम्नलिखित हैं

1. **यातायात के साधनों का विकास.** भारत में ब्रिटिश पूंजी के निवेश का महत्वपूर्ण प्रभावित है पड़ा कि देश में यातायात के साधनों का विकास हुआ रेल कंपनियों में ज्यादातर पूंजी लगी हुई थी ईस्ट इंडिया रेलवे कंपनी वह ग्रेट इंडियन पेंशनर रेलवे आदि कंपनियों ने भारतीय रेलवे के विकास पर धन लगाया **1853** में पहली रेल मुंबई से थाना तक चलाई गई **1844** से **1860** तक **12** रेलवे कंपनियों ने रेलवे लाइन बिछाने का कार्य शुरू किया इस समय रेलवे पर **850** करोड़ से भी अधिक विदेशी पूंजी लगी हुई थी सड़कों एवं जहाजरानी पर भी काफी विदेशी पूंजी का निवेश किया गया था **1948** में कुल **312** करोड रुपए की विदेशी पूंजी बिजली एवं परिवहन पर लगे हुए थे

2. **मजदूरों का शोषण.** भारतीयों को यह आशा थी कि विदेशी पूंजी निवेश से उन्हें ज्यादा रोजगार प्राप्त होंगे परंतु ऐसा नहीं हुआ अंग्रेजों की पूंजी रेलवे बैंकिंग खनन बागानों आदि में निवेश की गई भर्तियों को उच्च पदों पर नहीं लगाया जाता था केवल कुलियाना में कुशल मजदूर आदि के पदों पर नियुक्त किया जाता था इसके अलावा उनसे अधिक काम करवाया जाता था और वेतन भी काम दिया जाता था दादा भाई नौरोजी के अनुसार भारतीय श्रमिक दसों की तरह ही कार्य करते थे उनकी आर्थिक स्थिति बहुत दयानियां थी

3. **बागान उद्योगों का विकास.**भारत में विदेशी पूंजी के निवेश का एक महत्वपूर्ण प्रभावित है पड़ा कि भारत में बागान उद्योग जैसे नील कपास झूठ चाय अफीम आदि का विकास हुआ अंग्रेजों ने अधिक लाभ कमाने के लिए इन उद्योगों

पर धन लगाया मुख्य रूप से रेलवे बंदरगाह संचार के साधन बिजली उत्पादन सिंचाई के साधनों चाय कॉफी वह रबड़ के बागानों कोयला खानों बैंकिंग बीमा आदि में लगाई गई ब्रिटिश पूंजीपतियों को बागान उद्योगों में बहुत लाभ हुआ अंग्रेज भारत से कच्चा माल ले जाते और तैयार मालपान है भारतीय बाजारों में बेचते थे

4. **आधुनिक उद्योगों का धीमा विकास.** पूंजीपतियों ने उन उद्योगों में पूंजी नहीं लगे जिनकी ब्रिटिश उद्योगों से सीधी प्रतियोगिता थी उदाहरण के लिए उन्होंने सूती वस्त्र उद्योग में निवेश नहीं किया क्योंकि वह ब्रिटेन के उद्योगों में निर्मित श्रुति वस्त्र लाकर भारत में बेचते थे इसके अतिरिक्त अधिकतर कंपनियों पर विदेशियों का ही आधिपत्य था अंग्रेज अधिकारियों ने जानबूझकर भारतीयों को उच्च स्तर के प्रबंधन एवं तकनीकी कौशल का ज्ञान नहीं दिया यही कारण था कि भारतीय उद्योगों का अधिक विकास नहीं हुआ

5. **धन का निष्कासन.** अंग्रेज भारत में पूंजी का निवेश इसलिए करते थे ताकि यहां से अधिक धन कंकर इंग्लैंड ले जाया जा सके दादा भाई नौरोजी ने कहा है अब एक नया संकट भारत को भाया करांत कर रहा है अब तक धरती की सतह के ऊपर की सारी भारतीय पूंजी का इंग्लैंड को निकास हो रहा था किंतु अब धरती की सतह के नीचे की पूंजी भी इंग्लैंड ली है जाएगी भारत अब वह अपनी सहायता करने में असमर्थ है इंग्लैंड ने उसकी समस्त पूंजी ग्रहण कर ली है

आर्थिक जीवन में परिवर्तन. वर्तमान समाज के आर्थिक जीवन में भी अनेक बदलाव और समानांतर दिखाई देते हैं विज्ञान के अविष्कार औद्योगिकरण तथा नगरीकरण के फल स्वरुप भारतीय समाज की आर्थिक जीवन में निम्नलिखित प्रमुख परिवर्तन देखे जा सकते हैं

1. **पूंजीवाद का विकास.** भारत में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था विकसित रही है प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के खिलाफ स्वरूप देश में पूंजीवाद का आगमन हुआ और वर्तमान समय में वैश्वीकरण की दौड़ने इसे पर्याप्त रूप से प्राण वायु प्रदान की है आज देश में आर्थिक उत्पादन गांव में न होकर बड़ी-बड़ी मिलन कारखानों व प्रतिष्ठानों में बड़े-बड़े यंत्रों द्वारा बृहद स्तर पर किया जा रहा है बड़े पैमाने की उत्पादन हेतु विपुल धनराशि की आवश्यकता होती है अतः आर्थिक उत्पादन के साधनों पर उन्होंने अधिकार कर लिया जिनके पास पर्याप्त पूंजी थी टाटा बिरला सिहानिया अंबानी गोदरेज महिंद्रा आदि ने देश के अधिकांश उत्पादन साधनों पर अधिकार कर लिया है जबकि अन्य लोग अपना मानसिक या शारीरिक श्रम बेचकर जीव कोपार्जन करने के लिए मजबूर है पूंजीवाद के विकास के कारण भारतीय समाज भी दो आर्थिक वर्गों में विकसित हो गया है पूंजीवादी वर्ग तथा श्रमिक वर्ग आजादी मिलने के बाद भारत सरकार ने अनेक उद्योगों का राष्ट्रीयकरण देश के लोगों के आर्थिक कल्याण की दृष्टि से किया था आज स्थिति यह आ गई है कि सरकार अनेक सरकारी प्रतिष्ठानों को पूंजी पत्तियों के हाथ भेज देने के लिए बाध्य हो गई है

2. **ग्राम एवं कुटीर उद्योगों का हाल.**आर्थिक जीवन में हुए परिवर्तनों का यह भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है भारत में औद्योगीकरण के फलत है ग्रामीण लघु कुटीर उद्योग धंधों का सर्वनाश हो गया इसका मुख्य कारण यह है कि इस देश के गांव के कुटीर उद्योगों तथा नगरों के बड़े-बड़े उद्योगों के मध्य न तो कोई समन्वय है और नहीं किसी तरह का श्रम विभाजन स्पष्ट है कि बड़े पैमाने पर यंत्रों मशीनों द्वारा जिन सस्ती वस्तुओं को उत्पादित किया जाता है उनसे प्रतियोगिता करना ग्रामीण उद्योगों के बस की बात नहीं है इसके कारण भारत में ग्रामीण उद्योगों का निरंतर पतन

हुआ और अभी हो रहा है इसके कारण ग्रामीण शिल्पियों कारीगरों की स्थिति में अनेक बुरे परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं खाने के लिए सरकार ग्रामीण उद्योगों की सुरक्षा और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही सक्रिय रही है

3. **आय में वृद्धि.** आधुनिक भारत में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया में अत्यधिक वृद्धि होना है अब प्रति व्यक्ति आय पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है मूल्य के आधार पर भारत में प्रति व्यक्ति आय सन **1960 61** में **321** रुपए **1970 71** में **600. 72** रुपए **1980 81** में **1630** रुपए **1990 91** में **2222** और **1995 96** में **2573** रुपए आंकी गई थी

4. **जीवन स्तर में परिवर्तन.** भारतीय समाज में भारतीयों की जीवन स्तर में क्रांतिकारी बदलाव आया पहले जिन वस्तुओं को विलासिता का प्रतीक माना जाता था आज वे जनमानस के घरों में पहुंच गई मोटर कर मोटरसाइकिल रेडियो टीवी वाशिंग मशीन पक्के मकान ग्रह सजा अधिक आधुनिकरण वस्त्र आभूषण फोन और मोबाइल फोन कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रानिक वस्तुएं आज मात्र शहरों तक ही नहीं देश के लाखों ग्रामों तक पहुंच चुकी हैं भारत संचार निगम लिमिटेड मात्र ₹**20** में मोबाइल सुविधा देने की घोषणा कर चुकी है मेजपोशी सोफा सेट साइकिल स्टेनलेस स्टील के बर्तन अब आम वस्तुएं हैं खान-पान और वेशभूषा के संबंध में भी निरंतर परिवर्तन आते जा रहे हैं

5. **औद्योगिकरण.** भारतीय सामाजिक ढांचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन औद्योगिकरण द्वारा माना जाता है क्योंकि मात्रा इसी के ही कारण भारतीय समाज की महत्वपूर्ण आधार और संस्थाएं परिवर्तित हो गई हैं यदि औद्योगीकरण के परिणाम स्वरुप देश के उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा है राष्ट्रीय आय वृद्धि हुई है परंतु इसके कारण अनेक गंभीर समस्याएं भी उप हैंइसके ही कारण भारत में निवास स्थान का अभाव और गंदी बस्तियों का भयानक विकास हुआ है औद्योगीकरण से उद्योग धंधों का विकास हुआ है तथा उसने नगरों शहर की संख्या जभी ट्रिम गति से बड़ी है उसे अनुपात में नगर वासियों के लिए मकान नहीं बन पाए हैं परिणाम यह हुआ है कि नगरों में निवास स्थलों की बड़ी कमी है औद्योगीकरण से पूंजीवादी व्यवस्था बड़ी तेजी से पंक्ति है जिसके कारण श्रमिकों का शोषण बड़ा है आज वह संगठित होकर अपने अधिकारों की मांग करता है संघर्ष करता है हड़ताल और करता है कारखाना मिलन मत आलाबंदी करता है इससे मानव दिनों की हानि होती है राष्ट्रीय उत्पादन दुष्प्रभावित होता है

6. **कृषि में उत्पादन में वृद्धि.** वैज्ञानिक प्रविधियां उत्तम खाद एवं उर्वरक सिंचाई साधनों की उपलब्धि सरकारी संरक्षण और मशीनों के प्रयोग के फल स्वरुप कृषि उद्योग के क्षेत्र में क्रांतिकारी उन्नति हुई है इसका परिणाम यह है कि विगत अनेक वर्षों से देश में अनाज का विपुल भं

डार है अनाज के साथ-साथ देश के फल उत्पादन में भी वृद्धि हुई है जिससे विदेश में निर्यात करके प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा अर्जित की जाने लगी है इन तरीकों से खेती करने के कारण आज हमारे कृषक अधिक उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं और शेष बचे हुए समय को अन्य उत्पादक कार्यों में खर्च कर रहे हैं भारत में सहकारी खेती के लाभप्रद परिणाम मिले हैं इससे समाज में अनेक परिवर्तन आए हैं

7. **महंगाई एवं भिखारी में वृद्धि.** महंगाई और बेकरी के कारण निर्धनता की प्रदीप कीजिए के रूप में दृष्टतव्य है या सत्य है की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में प्रति व्यक्ति औसत आय में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई है और यह भी सही है कि निरंतर तेजी से बढ़ती जा रही है वस्तुओं की कीमतों में महंगाई भी औसत जनता की कमर तोड़ रही है सन **1981** की तुलना में आज लगभग सभी आवश्यक वस्तुओं की कीमतें कई गुना बढ़ चुकी हैं जबकि प्रति व्यक्ति आय उसे गति से नहीं बढ़ गई बढ़ पाई है आज बेरोजगारी भी भाव है रूप में बढ़ गई है स्थिति यह है कि अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ देश में शिक्षित वर्ग भी बेकरी का शिकार हो गया है अनुमान के आंकड़ों के अनुसार वर्तमान समय में लगभग **8** लाख से भी अधिक शिक्षित लोग बेकार हैं केंद्र व राज्यों एवं सरकारी नौकरियों की संख्या कम किए जाने के बाद यह समस्या उत्तरोत्तर गंभीर बनती जा रही है जिसके कारण विभिन्न सामाजिक समस्याएं भी बढ़ रही है आठवीं पंचवर्षीय योजना के मूल्यांकन से स्पष्ट होता है कि पिछले दो दशकों में रोजगार के अवसरों में मात्र **2.2** प्रतिशत वृद्धि दर्ज हुई हैइसके देश में विद्वान बेरोजगारी के प्लस और समाज में निर्धनता भिक्षवर्ती बाल श्रम का दुरुपयोग वेश्यावृत्ति अपराध एवं पाल अपराध आदि व्याधियों समस्याओं में भी वृद्धि हो रही है जो भविष्य में भारत के लिए गंभीर स्थिति पैदा कर सकती हैं

निष्कर्ष. उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है औपनिवेशिक भारत में जी विदेशी पूंजी का निवेश भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में हुआ था उसका एकमात्र लक्ष्य लाभ कमाना ही था भारत में उन्हीं क्षेत्रों में इस पूंजी का निवेश हुआ जिससे ब्रिटिश खेतों तथा उद्योगों की पूर्ति हो सके इसके परिणाम लाभदायक होने के साथ काफी हानिकारक रहे

प्रश्न 2. ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन बंगाल की आर्थिक स्थिति का वर्णन कीजिए

Ans. द्वैध शासन की स्थापना लार्ड क्लाइव द्वारा की गई इस प्रणाली की स्थापना अपनी गवर्नर के दूसरे दौर में एकलव्य ने बंगाल में की इस दोहरी शासन के नाम से भी जाना जाता है इस प्रणाली के अनुसार बंगाल के शासन को दो शक्तियों के बीच बांट दिया गया **1765** ई की इलाहाबाद की संधि द्वारा कंपनी को बंगाल बिहार एवं उड़ीसा का लगन उखाकर उसे खर्च करने तथा दीवानी झगड़ों का निपटारा करने का अधिकार मिल गया दूसरे शब्दों में बंगाल के दीवानी अधिकार कंपनी के पास थे तथा शासन का प्रबंध कार्य नवाब के हाथों में था नवाब के पास अपनी सुना नहीं थी कंपनी की सैनिक शक्ति के आधार पर बंगाल की रक्षा करनी थी कंपनी का बंगाल की आय पर पूरा नियंत्रण था तथा वह नवाब को शासन चलाने के लिए **53** लाख देती थी इस प्रकार बंगाल में एक साथ दो सरकारी थी एक कंपनी की सरकार तथा दूसरी नवाब की सरकार एक प्रभावशाली वह दूसरी प्रभाव विहीन एक वास्तविक दूसरी नाम मात्र

दोहरा शासन कैसे स्थापित हुआ. मुगल सम्राट की ओर से बंगाल के नवाब को दीवाने थानिजामत अधिकार प्राप्त थे क्लाइव ने इन दोनों शक्तियों को प्राप्त कर लिया **1765** ईस्वी में बंगाल के नवाब मीर जाफर की मृत्यु हो गई जिसका लाभ उठाकर क्लाइव ने नवाब के पुत्र निजामुद्दीन दौला से एक संधि करके निजामत पर अधिकार प्राप्त कर लिया कंपनी ने उसे बंगाल का नवाब रहने दिया तथा उसे शासन प्रबंध का कार्य चलाने के लिए **53** लाख रुपया प्रतिवर्ष देना

स्वीकार किया लाइव ने कुछ समय पश्चात मुगल सम्राट शाह आलम से भी संधि कर ली जिसके अनुसार 26 लख रुपए के बदले में मुगल सम्राट ने बंगाल बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी कंपनी को दे दी इस प्रकार दीवाने तथा निजामत दोनों अधिकार प्राप्त करके कंपनी बंगाल की सर्वोच्च शक्ति बन गई परंतु अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी से शासन का उत्तरदायित्व नवाब के हाथों में ही रहने दिया

द्वैध शासन प्रणाली के गुण. द्वैध शासन प्रणाली क्लास की कूटनीति की उपस्थिति यदि 20 प्रणाली में कई दोस्त थे परंतु फिर भी यह प्रणाली कई बातों में अंग्रेजों के लिए लाभ प्रतिशत हुई इसके निम्न गुण थे

1. बंगाल में अंग्रेजों और नवाब में सर्वोच्चता के लिए संघर्ष का अंत होना. इस प्रणाली में बंगाल में व्यावहारिक रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी की सर्वोच्चता स्थापित करती नवाब कौन से अंग्रेजों के अधीन हो गया

2. **भारतीयों का अंधेरे में रहना.** सोनाली द्वारा अंग्रेजों ने सारी शक्तियां अपने हाथों में ले ली परंतु इस बारे में भारतीय जनता को कुछ भी पता नहीं चला यदि अंग्रेज सीधे तौर पर नवाब को हटाते तो शायद उनके विरुद्ध विद्रोह हो जाता

3.**यूरोपीय शक्तियों का अंधेरे में रहना.** इस प्रणाली द्वारा अंग्रेज भारत में उनके विरोधी यूरोपीय शक्तियों फ्रांसीसी दक्ष को भी अंधेरे में रख सके नवाब के नाम पर ही उन्होंने यूरोपीय विरोधियों की परीक्षा के बिना बंगाल की सर्वाधिक शक्ति अपने हाथों में ले ली थी इस प्रणाली से कंपनी इंग्लैंड की संसद के अनावश्यक हस्ताक्षे से सीधी बच गई

4. **मराठा आक्रमण के भय की समाप्ति.** इस प्रणाली ने कंपनी को मराठा शक्ति के प्रतिरोध के कोप से भी बचा दिया यदि कंपनी सीधे बंगाल के नवाब को हटाकर सट्टा हथियार थी तो आवश्यक रूप से वे मैराथन के साथ लड़ाई में उलझ जाती

5. **अंग्रेज कर्मचारियों में अनुभव की कमी.** उसे समय तक ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों को भारतीय शासन व्यवस्था का काम ज्ञान था यह भारतीय सामाजिक व्यवस्थाओं के बारे में भी अनभिज्ञ थे यदि बंगाल का शासन कंपनी सीधा अपने हाथों में लेती तो उसे परेशानी हो सकती थी

6. **भविष्य में शासन करने की तैयारी.** इस प्रणाली ने कंपनी को निकट भविष्य में भारतीय प्रशासन को अपने हाथों में लेने के लिए तैयार कर दिया प्रोफेसर डोटवाल लिखते हैं इस व्यवस्था ने सत्ता प्राप्ति तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्वों के बहन के संक्रांति कालीन मंच को तैयार किया.

द्वैध शासन प्रणाली के दोष.अनेक गुना के होते हुए भी यह प्रणाली दोषपूर्ण सिद्ध हुई इस प्रणाली ने शक्ति वह उत्तरदायित्व को एक दूसरे से अलग कर दिया इस कारण बंगाल की जनता के लिए यह हानिकारक सिद्ध हुई इस प्रथा के दोस निम्नलिखित थे

1. **शक्ति को दायित्व** से अलग करना. इस प्रणाली में शक्ति को उत्तरदाई से अलग कर दिया जो शासन प्रबंध की कुशलता के लिए हानिकारक सिद्ध हुई नवाब के पास शासन प्रबंध का उत्तरदायित्व था परंतु वास्तविक शक्ति नहीं

थी नवाब कंपनी का पेंशन भुगतान मात्र था कंपनी के पास सकती थी परंतु उत्तरदायित्व नहीं था इस प्रकार यह प्रबंध शासन के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ

2. **निजी व्यापार के लिए बढ़ावा.** नवाब के पास शक्ति न होने के कारण वह अंग्रेजों पर कोई प्रतिबंध नहीं लग सकता था इससे कंपनी के कर्मचारी निजी व्यापार करने लगे जिससे कंपनी की आर्थिक हानि हुई

3 **भारतीय व्यापार व उद्योगों का अहित.** भारतीय व्यापारियों के पास रियासतें न होने के कारण वे अंग्रेजों का मुकाबला नहीं कर सके इससे उनका व्यापार चौपट हो गया भारतीय कारीगर कम पैसे में अंग्रेज कारखाना में काम करने लगे भारतीय उद्योग पर प्रतिबंध लगा दिए गए इस प्रकार भारतीय व्यापार उद्योग खत्म होने लगा

4. **किसानों की दुर्दशा.** इस व्यवस्था में अंग्रेज अधिकारी किसानों से ज्यादा से ज्यादा भूमिका वसूलने वालों तथा किसानों पर अत्याचार भी करने लगे भूमि ठेके पर दी जाने लगी तथा जैसे-जैसे ठेकेदारों की लगन संबंधी मांग पड़ती गई वैसे-वैसे किसने की दक्षता ही नहीं होती गई परिणाम स्वरुप **1769 70** ईस्वी में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा जिसमें बंगाल की एक तिहाई जनसंख्या का सफाया हो गया

5. **न्याय व्यवस्था में दोष.** बंगाल की न्याय व्यवस्था को भी द्वैध शासन प्रणाली में दूषित कर दिया न्यायाधीशों की योग्यता के आधार पर नियुक्तियां बंद हो गई न्यायाधीशों के वेतन बंद करके जर्मन उनकी जीविका का साधन बना दिए गए नवाब वी कंपनी के अधिक का क्षेत्र निश्चित होने के कारण न्याय में कंपनी का अनुच्छेद हस्तक्षेप बढ़ता चला गया

6. **बंगाल में अराजकता.** मौलिक रूप से प्रणाली दोस्तों की नवाब को शासन चलना था परंतु उनके पास शक्तियां नहीं थी कंपनी के पास सकती थी परंतु वह शासन प्रबंध के लिए जिम्मेदार नहीं थी इससे शासन दुर्बल हो गया तथा गड़बड़ी फैल गई पुलिस कंपनी के कर्मचारियों तथा अधिकारियों द्वारा धांधली मचा दी गई जिससे बंगाल में प् अराजकता फैल गई

7. **. आर्थिक दृष्टि से यह** प्रणाली ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए हानिकारक सिद्ध हुई शासन व्यवस्था में शिथिलता आने के कारण कंपनी की आशाओं के अनुरूप राजस्व की प्राप्ति नहीं हो पाई किसानों से यदि ज्यादा धन वसूल किया जाता था तो भी वह सारा धन कंपनी तक नहीं पूछता था कंपनी के कर्मचारी व्यक्तिगत व्यापार में ज्यादा रुचि लेने लगे जिस कंपनी की आय पर बुरा प्रभाव पड़ा परिणाम स्वरुप **1770** ई तक कंपनी पर **60** लाख पाउंड का रन हो गया तथा वह दिवालियापन की स्थिति में आ गई

इस प्रकार कलाई द्वारा स्थापित जय शासन प्रणाली में अनेक दोस्त थे कुछ ही वर्षों में इस प्रणाली के कारण बंगाल में अशांति तथा व्यवस्था फैल गई इस शासन व्यवस्था में बंगाल को दोहरी रूप में शोषण किया जो बंगाल कंपनी के शासन से पहले पूरे भारत में समृद्धि के लिए जाना जाता था वहां पर कंपनी के शासन में लोग भूख से मार रहे थे बंगाल के आर्थिक शोषण की जवाब दे ही थी भी अंग्रेजों की नहीं थी क्योंकि दोहरी शासन व्यवस्था शासन के अंतर्गत में सिर्फ राजस्व एकत्र करने की जिम्मेदारी तक सीमित थे

प्रश्न **3.1857 तथा पर विश्व युद्ध के मध्य भारत में व्यापार वृद्धि तथा उसकी प्रकृति की व्याख्या कीजिए**

Ans. आधुनिक उद्योगों का विकास. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश शासन ने मशीनों द्वारा बड़े पैमाने के आधुनिक उद्योगों की स्थापना की इस विषय पर यह तथ्य योग्य है कि इन आधुनिक उद्योगों की स्थापना भी भारतीय के लाभ के लिए ही नहीं अपितु ब्रिटिश हितों को ध्यान में ही रखकर की गई थी उधर न रेलवे का विकास भारत में इसलिए किया गया ताकि इंग्लैंड में ज्यादा से ज्यादा कच्चा माल भेजा जा सके तथा वहां वे निर्मित माल भारत के कोने-कोने तक पहुंचा जा सके ब्रिटिश शासन काल से निम्नलिखित उद्योगों का विकास हुआ

रेलवे की स्थापना. भारत में औद्योगिक इकाई के रूप में ब्रिटिश सरकार ने रेलवे यातायात का विस्तार किया या रेलवे का निर्माण लड़ डलहौजी के शासनकाल में निजी कंपनियों द्वारा शुरू किया गया लॉर्ड डलहौजी ने रेलवे निर्मित की एक प्रमुख अभिप्रेरणा का उल्लेख अपनी एक प्रसिद्ध टिप्पणी में किया है वह कहता है इनको स्थापना से भारत को व्यवहार व्यावसायिक एवं सामाजिक लाभ होंगे उनकी गिनती नहीं की जा सकती इंग्लैंड में भारतीय हुई की मांग में वृद्धि हो रही है दूर के खेतों से बंदरगाहों तक इसे ले जाने में समुचित साधन उपलब्ध हो तो पर्याप्त परिणाम के अच्छे किस्म की हुई प्राप्त की जा सकती है

रेलवे ही यातायात से औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना अब सरल हो गया भारत सरकार ब्रिटिश रेलवे कंपनियों को उनके द्वारा लगाई गई पूंजी पर **5%** ब्याज देने को तैयार हो गई लॉर्ड डलहौजी के शासनकाल में **16** अप्रैल **1853** ई को पहली रेलवे लाइन मुंबई और थाना के मध्य बिछाई गई देश को जब स्वतंत्रता प्राप्त हुई उसे समय देश में कुल **40000** मील लंबी रेलवे लाइन थी देश के विस्तार एवं जनसंख्या को देखकर कहा जा सकता है कि रेलवे का विकास है पर्याप्त एकांकी और विकृत रहा रेलवे ने पुराने समाज के आर्थिक आधार को नष्ट करने में मदद की तथा गांव उसके कारण शहरों पर निर्भर हो गए

1. **सूती वस्त्र उद्योग. 1853** ईस्वी में कागज की नाना भाई द्वारा मुंबई में प्रथम सूती मिल शुरू की गई परंतु यह याद रहे अंग्रेजों ने भारत में सूती वस्त्र उद्योग के आधुनिक ढंग से उत्पादन शुरू किए जाने की प्रक्रिया का स्वागत नहीं किया क्योंकि इससे इंग्लैंड में बने हुए चौथी वस्त्र का भारतीय बाजार पर बुरा असर पड़ सकता था सरकार ने लंका शायर से सूती वस्त्र से आयात कर समाप्त कर दिया लेकिन उनके विरोधी रुक के बावजूद सूती वस्त्र उद्योग ने उन्नति की **1879** ईस्वी में भारत में सूती वस्त्र मिलों की संख्या बढ़कर **56** हो गई लेकिन **1895** और **1905** ई के मध्य सूती वस्त्र उद्योग के विकास की गति धीमी हो गई इसके दो कारण थे प्रथम भयंकर दुर्भिक्षों का पढ़ने तथा **1902** ईस्वी में अमेरिकी सट्टेबाजी के कारण हुई की कीमतों में बहुत ज्यादा वृद्धि हो जाना परंतु जल्द ही इस उद्योग में स्वयं को संभाला तथा **1913 14** ईस्वी में इसकी **264** मिले हो गई प्रथम महायुद्ध **1914** से **18** के कारण इंग्लैंड से आयात की कमी के कारण इस उद्योग को पनपना का अवसर मिल गया **1940** ईस्वी में विभाग जीत भारत में **423** सूची वस्त्र की मिले थी जो पाकिस्तान बन जाने के कारण कम होकर केवल **408** ही रह गई स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही इस उद्योग में तीव्रता से उन्नति की है

2. पटसन उद्योग. रिसड़ा बंगाल में पहली पटसन मिल मिल और **1855** में स्थापित हुई धीरे-धीरे इस उद्योग का विस्तार हुआ **1882** में जूट मिलों की संख्या बढ़कर **20** हो गई इनमें अधिकांश यूरोपीय मालिकों के हाथ में थी **19**वीं शताब्दी के अंतिम **25** वर्षों में **5000** से भी अधिक विद्युत करके इसमें काम करने लगे थे परंतु कुछ वर्षों से इसके विकास की गति धीमी हो गई और **1894 95** में यह संख्या बढ़कर केवल **20** हो सके इसमें से अधिकांश मिले बंगाल में थी जूट उद्योग के अधिकांश मिले भारत के पश्चिम बंगाल में रह गई इसलिए स्वतंत्रता भारत की सरकार के सामने झूठ उत्पादन बढ़ाने की समस्या आई किस प्राय अब हल कर लिया गया है

3. लोहा में इस्पात उद्योग. **1873** ई में बिहार में प्रथम इस्पात कारखाना स्थापित हुआ कलंदर में एक कारखाना बंगाल स्टील एंड आयरन कंपनी के अधीन आ गया लेकिन यह कंपनी लोहा में इस्पात का अधिक उत्पादन नहीं कर पाई **1960** ईस्वी में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना जमशेदपुर में हुई इस कंपनी ने बहुत ज्यादा उत्पादन करने में सफलता प्राप्त की एक अनुमान के अनुसार इसमें **6** वर्ष के अंदर इतना लोहा में इस्पात का उत्पादन किया की प्रथम महायुद्ध के कारण विदेशों से आयात में आई कमी तथा युद्धों के कारण लोहे की बड़ी हुई सारी मांग को यही कंपनी पूरा करती रही इस बात का उत्पादन **1913** ईस्वी में **91** हजार तन से बढ़कर **1918** ईस्वी में **124000** तन हो गई इसके बाद **1918** ईस्वी में वन एंड कंपनी द्वारा ई शाल के समीप हीरापुर में इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना की गई

4. शिशा उद्योग. शिक्षा तैयार करने का उद्योग **19**वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में शुरू हुआ प्रारंभ इसकी उत्पादन लागत इतनी ऊंची थी कि इसका उत्पादन अत्यधिक नानी के कारण बंद कर दिया गया विश्व शताब्दी के आरंभ में इनमें से कुछ कारखाने को पुनः चालू किया गया **1947** ईस्वी में देश में उनके लगभग **100** कारखाने थे लेकिन यह उद्योग ब्रिटिश काल में कोई विशेष प्रगति नहीं कर सका स्वतंत्रता के बाद उद्योग में प्रगति की

5. कोयला खान उद्योग. कोयला खान उद्योग ने **19**वीं शताब्दी के उत्तराखंड में बड़ी प्रगति की बिहार उड़ीसा मध्य प्रदेश तथा बंगाल में कोयले को बड़े पैमाने पर खुद कर निकल गया यह उद्योग नवीनतम तकनीकी ज्ञान की कमी में अधिक प्रगति नहीं कर सका इस उद्योग पर प्राय यूरोपीय बस्तियों का ही एक अधिकार था केवल घटिया किस्म की कोयले की खाने ही भारतवासियों के पास थी

6. कागज उद्योग. कागज का उत्पादन आधुनिक तरीके से **19**वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू किया गया **1870** में सर्वप्रथम हुगली में कागज की पहली मिल लगाई गई **1879** ईस्वी में लखनऊ में भी कागज मिल की स्थापना की गई **1882** में टीटागढ़ पेपर मिल की स्थापना की गई **1885** में पुणे में डेक्कन पेपर मिल की और **1889** में रानीगंज में बंगाल पेपर मिल की स्थापना की गई शिक्षा प्रयास एवं राष्ट्रीय आंदोलन के विकास के साथ-साथ इस उद्योग में उन्नति की स्वतंत्रता के बाद इस उद्योग ने बड़ी प्रगति की है परंतु अभी तक हमें मांग को पूरा करने के लिए अखबारों तथा बहुत बढ़िया कागज विदेश से मांगना पड़ता है.

7. चीनी उद्योग. चीनी उद्योग विशेषताओं से शुरू हुआ अधिकतर चीनी मील पंजाब और उत्तर प्रदेश में स्थापित की गई स्वतंत्रता के समय देश में **142** चीनी मील थी यह उद्योग स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बहुत प्रगति कर सका है

8. चमड़ा उद्योग. चमड़ा उद्योग आधुनिक ढंग से **19**वीं शताब्दी में शुरू हुआ सर्वप्रथम **1860** ई कानपुर महाधुनि धन की हार्नेस और सैलरी फैक्ट्री की स्थापना की गई इस समय से कानपुर चामुंडा उद्योग का प्रमुख केंद्र बन गया अब कानपुर के अलावा मुंबई और मद्रास में भी यह उद्योग प्रगति कर रहा है स्वतंत्रता के बाद अनेक स्थानों पर आधुनिक ढंग की चमड़ा बनाने की फैक्ट्री स्थापित की गई है

9. अन्य उद्योग. कुछ अनुभव है जिन्होंने **20**वीं शताब्दी के शुरू में प्रगति की उनमें कपास की और ताई तथा कटाई नमक अभ्रक और सूर्य जैसे खनिज उद्योग थे इन उद्योगों के अलावा चावल आटे तथा इमारत की लकड़ी को मिले आदि प्रमुख है विश्व शादी के चौथे दशक में सीमेंट दिया सिलाई आदि उद्योग विकसित हुए आधुनिक ढंग पर जहाज निर्माण का कार्य विशाखापट्टनम में **1941** ईस्वी में शुरू हुआ वहां जहाज बनाने की सिंधिया स्टीम नेविगेशन कंपनी की स्थापना की गई थी स्वतंत्रता के बाद बड़े पैमाने पर रसायन औद्योगिक इकाइयों भी स्थापित की गई

प्रश्न 4. ब्रिटिश सरकार की शुल्क नीति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए

Ans. स्वतंत्र व्यापार नीति. **19**वीं साड़ी में भारत सरकार ने हस्तक्षेप करने की नीति को अपनाया यह उसे समय इंग्लैंड में प्रचलित सिद्धांतों के अनुसार थी हालांकि दोनों देशों की दशाएं बिल्कुल भिन्न थी इंग्लैंड में उद्योग और व्यापार मजबूत आधार पर स्थित थे और उन्होंने विदेशी प्रतियोगिता के लिए काफी शक्ति पैदा कर ली थी किंतु भारतीय व्यापार और उद्योग बिल्कुल संगठित थे और राज्य की सहायता के योग्य थे हस्तक्षेप में करने की नीति के अनुसार हमारे उद्योगों की रक्षा के लिए आयात कर नहीं लगाया गया और उन्हें विदेशी उद्योगपतियों की इच्छा पर छोड़ दिया गया गदर के बाद भारत सरकार की आर्थिक दशा गिर गई और इसके अलावा सरकार को आकाअल सहायता में बहुत साधन खर्च करना पड़ा इसलिए सरकार को आयात कर लगाकर अपनी आर्थिक दशा सुधारनी पड़ी किंतु यह कर नाम मात्र के थे जैसे ही सरकार की आर्थिक दशा सुधारी लंका शायर ने इन सब आयात कारों को हटाने के लिए भारत सरकार को विश्वास किया आयातकर कुछ ही वस्तुओं पर लगाया गया तथा उसे हमारे वहां यहां की वस्तुओं पर उत्पादन कर लगाकर सूरज संतुलित कर लिया गया जब आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए अतिरिक्त कर लगाना आवश्यक हो गया तब **1894** इसी में स्वतंत्र व्यापार नीति को उठा लिया और विदेशी सूती माल और सूट पर **5%** कर लगा दिया लंका शायर ने कर लगाने का बड़ा विरोध हुआ और ब्रिटिश जनता को शांत करने के लिए सरकार ने भारतीय सूती माल पर उत्पादन कर लगाकर आयात कर व्यर्थ कर दिया इस श्रीलंका शहर को संतोष नहीं हुआ और सस्ती चीज खरीदने वाले हिंदुस्तानियों ने भी विरोध किया हालांकि इसका अभिप्राय राज्य सहायता देने की अपेक्षा भारतीय उद्योगों को नष्ट करना था

साम्राज्य प्राथमिकता.साम्राज्य दरजी किस अभिप्राय पुस्तक जी से है जो करो कि दर को घटकर ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक मेंबरों को व्यापार प्राथमिकता में दी जाती है इस दरजी को सबसे पहले कनाडा ने **1898** ईस्वी में ब्रिटिश की

वस्तुओं पर कर घटकर जारी किया यही तर्ज ही साम्राज्य के दूसरे देशों को भी आपसी समझौते के आधार पर दिखानी थी **1902** ईस्वी में एक कांफ्रेंस हुई जिसमें कि ब्रिटिश साम्राज्य के सभी देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और साम्राज्य तर्ज ही की नीति को अपनाया और इसके अनुसार साम्राज्य के बहुत से देश में ब्रिटेन के पक्ष में इसको जारी भी किया और साथ-साथ ब्रिटेन में भी सहायता की आशा की इंग्लैंड अनेक कर्म से इस आपसी व्यापारिक नीति को नहीं अपना सका और वह साम्राज्य दर्ज ही के पक्ष में स्वतंत्र व्यापार नीति के छेड़ने को तैयार नहीं हुआ भारत को भी समान रूप से इस साम्राज्य दर्ज ही योजना में दिलचस्पी लेनी चाहिए थी किंतु भारत को आर्थिक नीति का संचालन हाइट हाल में होता था

फिश कल कमिशन. औद्योगिक कमीशन की सिफारिश के अनुसार भारत सचिव ने स्वीकृति फिजिकल ऑटोनॉमी कन्वेंशन कमीशन में सभापति कर इब्राहिम रहमतउल्लाह सहित **11** मेंबर थे इस कमीशन के मेंबरों ने अपनी रिपोर्ट अलग-अलग दी किंतु बहुमत में निम्नलिखित सिद्धांतों के अनुसार भारतीय उद्योगों के विशेष संरक्षण की सिफारिश की

1.वही उद्योग संरक्षण का अधिकारी हो सकता है जिसके माल की पर्याप्त सामग्री सस्ते साधन पूरे मजदूर और विस्तृत घरेलू बाजार जैसे प्राकृतिक सुविधाएं हैं क्योंकि इनके बिना उद्योग देश के लिए भाग हो जाएगा

2. उद्योग वही सफल हो सकता है जो संरक्षण की सहायता के बिना या तो बिल्कुल उन्नति न कर सके या बड़ी शीघ्रता से देश का हित न कर सके

3. उद्योग वही सफल हो सकता है जो कि अंत में बिना संरक्षण के विश्व की प्रतियोगिता का सामना कर सकें.

ऊपर कही गई शर्तों के साथ संरक्षण स्वीकार करने से पहले इन शर्तों को भी ध्यान में रखना चाहिए

1**. उद्योग कम लागत पर बहुत सी वस्तुएं बना सके**

2. यह देश की सारी मांगों की पूर्ति कर सके

3. राज्य की सहायता से पोस्ट और मुद्रा गिरने वाले देशों के उद्योगों के विरुद्ध विशेष संरक्षण की आवश्यकता है

4. मुख्य उद्योग और जो देश रक्षा के लिए महत्वपूर्ण उद्योग है उनकी रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए भले ही वह इन शर्तों की पूर्ति न करते हो

व्यावहारिक दृष्टि से द्वितीय महायुद्ध कालीन. सरकारी शुल्क नीति अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि युद्ध की सफल बनाने के लिए सूल्क नीति में पर्याप्त परिवर्तन किए गए द्वितीय महायुद्ध कल में निर्यात और आयात पर नियंत्रण करना आवश्यक समझा गया था परंतु युद्ध समाप्त होने पर इस नियंत्रण में कुछ परिवर्तन करना भी अत्यंत आवश्यक समझा गया क्योंकि शांति काल में इतना बड़ा नियंत्रण आवश्यक नहीं जितना युद्ध काल में आयात के बारे में सन **1946** और **1947** के पहले सा महीना में भारत सरकार ने नरम नीति का पालन किया दुर्लभ मुद्रा के बारे में भी सरकार की नीति नरम ही रही पर अगस्त **1947** के बाद सरकार की जीती कढ़ाई की हो गई यहां तक की भारत इंग्लैंड के बीच में हुए समझौते के अनुसार हमारे जमा पॉन्ड पाने के फंड में से जो पॉन्ड पानी की रकम खर्च करने के

लिए हमें मिली थी वह भी हम खर्च नहीं कर सके दुर्लभ मुद्रा क्षेत्र या डॉलर क्षेत्र में आने वाले माल के बारे में विशेषपदार्थ के आयात की भी स्वीकृति नहीं दी जाती थी और इंग्लैंड में उपलब्ध थी और वास्तव में इंग्लैंड में माल आता नहीं था गलत है देश में माल की तंगी आ गई और आयात बहुत गिर गया 1 अगस्त 1949 से भारत इंग्लैंड के बीच के आर्थिक समझौते में फिर आवश्यक संशोधन हुआ और इंग्लैंड ने भारत को जो घाटा हो रहा था उसे पूरा करने का वचन दिया इसके बदले में भारत अंपायर डॉलर पुल का पूरा सदस्य बन गया सरकार ने अपनी आयात नीति को और अधिक विस्तृत करने का निश्चय किया ओपन जनरल लाइसेंस के अंतर्गत चीजों की संख्या अब केवल 20 रह गई सेप्टेंबर 1949 में जो आयात नीति सरकार ने घोषित की उसके अनुसार आयात को तीन श्रेणियां में विभाजित कर दिया गया

1. **यह चीज जिनके लिए साधारण दया लाइसेंस नहीं दिए जाएंगे**

2. यह चीज जिनके लिए एक निश्चित परिमाण के आधार पर लाइसेंस दिए जाएंगे

3. वे चीज जिनका समय-समय पर लाइसेंस दिया जा सकेगा बसे कि उनके आयत का हाल समय उचित कारण बताया जा सके

दुर्लभ मुद्रा प्रदेश से आयात करने की स्वीकृति इस दशा में मिल सकती थी जबकि शटरिंग प्रदेश में वह या उसकी जगह काम आने वाला दूसरा माल नहीं मिलता हो अगर किसी चीज के आयात की व्यवस्था किसी दीपक से व्यापारिक समझौते में की जा चुकी है तो उसकी दूसरी जगह से आयात करने की स्वीकृति नहीं दी जाती थी रिजर्व बैंक ने जनवरी 1948 से अनधिकृत आयत का भुगतान करने के लिए विदेशी रुपया भेजने की जो सुविधा दे रखी थी वह भी वापस ले ली गई इसके बाद भी जैसी-जैसे जरूरत है ए अलग-अलग चीजों की आयत के बारे में कुछ फर फर होता रहा पर मूल नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ इस बीच में रुपए का भी सितंबर 1949 में अवमूल्यन हो चुका था और उसका हमारे विदेशी व्यापार के संतुलन पर अनुकूल प्रभाव भी पड़ रहा था परंतु 25 जनवरी 1950 को जनवरी जून 1950 के लिए रेशम के तार अलवर धातु भारी रासायनिक पदार्थ और दवाइयां आदि जैसे आवश्यक उपभोग के पदार्थ को सुलभ मुद्रा प्रदेशों से करने किया जाती कच्चे कपास का आयात दुर्लभ मुद्रा प्रदेशों से करने की आज्ञा दी जुलाई 1950 से दिसंबर 1950 के समय के लिए भी आयात नीति में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ लगभग 37 से 40 करोड रुपए प्रति मास के आयात की व्यवस्था की गई

प्रश्न 5. औपनिवेशिक शासन के दौरान नई शहरी केदो के विकास पर एक आलोचनात्मक निबंध लिखिए

Ans. नगर से संबंधित नगरीकरण की प्रक्रिया है अतः इस प्रक्रिया को सुलझाने से पहले नगर क्या है यह समझ लेना जरूरी है वास्तव में नगर की कोई निश्चित परिभाषा देना कठिन है मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि नगर सामाजिक विभिन्नताओं का वह समुदाय है जहां द्वितीय समूह तथा नियंत्रण उद्योग एवं व्यापार धनी आबादी और वैज्ञानिक संबंधों की प्रधानता हो अतः हम कह सकते हैं कि नगर एक ऐसा जन समुदाय होता है जिसकी अपनी कुछ विशेषताएं होती हैं नगरों में अनेक तरह के उद्योग धंधे व्यापार एवं वाणिज्य होते हैं इस कारण देश-विदेश के

विभिन्न भागों से प्रत्येक जाती प्रजाती धर्म और वर्ग के लोग नगर में आकर बस जाते हैं इसलिए नगर की आबादी केवल अधिक ही नहीं होती बल्कि उसे आबादी में एकरूपता न होकर विभिन्नता होती है आबादी अधिक होने के अर्थात नागरिक समुदाय का आकार बड़ा होने के कारण ज्यादातर लोगों के साथ हमारा व्यक्तिक संबंध स्थापित नहीं हो पता है इस कारण नगर में द्वितीयक समूह एवं नियंत्रण की प्रधानता होती है

नगरीकरण का अर्थ. क्रमिक विकास के दौरान में एक समुदाय जिस्म की नगर के जीवन की विशेषताओं का अभाव है धीरे-धीरे उन विशेषताओं को प्राप्त करता जाए मोटे तौर पर नागरिक जीवन की विशेषताओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया को ही नगरीकरण कहते हैं दूसरे शब्दों में नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्राम धीरे-धीरे नगर में परिवर्तित हो जाता है यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्राम की परिस्थितिगत अवस्थाओं में इस भांति परिवर्तन हो जाता है कि वह फिर ग्राम नहीं रह जाता और वहां के लोगों के जीवन में शहर पर आ जाता है विभिन्न जाति धर्म समुदाय व्यवहार के लोगों का आकार 10 लाख फलक है आबादी घणी हो जाना अनेक तरह के पैसों का पन्ना यातायात और संचार के साधनों विकास होना जनसंख्या के दबाव के कारण समुदाय के क्षेत्र में निरंतर विस्तार होना बड़े पैमाने में उत्पादन का होना पुलिस कोर्ट आदि की क्रियाशीलता बढ़ाना वह व्यक्तिक संबंधों का न होना नगरीकरण की प्रक्रिया के द्योतक हैं

भूतकाल में नगरीकरण के निर्धारक तत्व. नगरीकरण की प्रक्रिया को भूतकाल में प्रोत्साहित करने वाले साथ कारकों का लेख हम यहां कर सकते हैं के कारक इस तरह हैं

1. खाद्य सामग्री का अधिक्य.

2. परिवहन के साधन का आविष्कार.

3. अनुकूल भौगोलिक अवस्था.

4. सामाजिक संगठन का एक स्वरूप.

5 सैनिक शिविर की स्थापना.

6. धार्मिक महत्व के स्थान.

7. सांस्कृतिक अथवा आर्थिक महत्व.

नगरों के विकास के वर्तमान कारण. भारत में उपरोक्त सा कर्म से तो नगरीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई किंतु उसके बाद उसे प्रक्रिया के विकास में योग देने वाले अनेक कारक भी होते हैं यह निम्नलिखित है

1. औद्योगिकरण. आधुनिक अवस्था में किसी भी राष्ट्र के जीवन के औद्योगीकरण की सर्वोत्तम कसौटी उसे राष्ट्र में नगरों के विकास की दर और स्वरूप है दूसरे शब्दों में नगरों के विकास में औद्योगीकरण एक महत्वपूर्ण कारण है और यदि किसी देश में नगरों का विकास श्री गति से हो रहा है तो समझ लेना चाहिए कि वहां औद्योगिकरण भी उतना ही जल्दी से हो रहा है औद्योगीकरण नगरों के विकास से निम्न तरह से सहायता होती है

A. औद्योगीकरण से जनसंख्या बढ़ती है. जिन स्थानों पBर उद्योगों में विकास हो रहा है या कोई नया उद्योग शुरू किया गया है तो उसे उद्योग में कार्य करने योग्य अनेक व्यक्तियों की जरूरत होती है साथ ही उद्योग में कार्य करने वालों की जरूरत की पूर्ति के लिए अनेक दूसरे लोग भी वहां आ जाते हैं इस तरह नगर की जनसंख्या बढ़ती है एवं नगर का विस्तार हो जाता है

B **. औद्योगीकरण के साथ-साथ व्यापार एवं वाणिज्य भी बढ़ता है.** औद्योगिक केंद्र में एक तो वे लोग आकर निवास करते हैं जो उसे उद्योग के लिए कच्चा माल उपकरण औजार मशीन आदि का व्यापार करते हैं दूसरे भी लोग भी आ जाते हैं जो उसे उद्योग से बनी चीजों को खरीद कर देश में विस्तृत करने का काम करते हैं साथ ही उसे उद्योग के लिए आवश्यक पूंजी या सह आदि जताने के लिए अनेक प्रकार के बैंक आदि भी खुल जाते हैं इस तरह औद्योगीकरण के साथ-साथ व्यापार एवं वाणिज्य में प्रगति होती जाती है एवं इन सब की प्रगति का अर्थ नगर की प्रगति अथवा विकास है

C . औद्योगिकरण रोजगार क्षेत्र को विस्तृत करता है. औद्योगिकरण विभिन्न तरह के व्यवस्थाओं को उत्पन्न करता है उसे उद्योग से संबंधित वह उसे उद्योग में काम करने वालों की जरूरत से संबंधित अनेक तरह के पैसे इस क्षेत्र में आपसे आप पर अप जाते हैं इस तरह रोजगार का क्षेत्र विस्तृत होता है और देश के कोने-कोने से लोग इस स्थान की तरफ आकर्षित होते हैं

D . औद्योगिकरण व परिवहन तथा संचार.इनके साधनों के विकास को औद्योगिकरण प्रोत्साहित करता है उद्योग में लगे लोगों के लिए यातायात की सुविधा छुटने व उद्योग के लिए जरूरी कच्चे माल को लाने और बनी हु यह आसपास के क्षेत्र के लिए चीजों को विभिन्न बाजारों पाठक पहुंचने के लिए परिवहन के साधनों की उन्नति उद्योगों के विकास के साथ-साथ होती है जितनी अधिक परिवहन व संचार के साधनों उन्नति होगी नगर का विकास भी उतनी ही तीव्रता से संभव होगा

E . **औद्योगीकरण के साथ-साथ शिक्षा मनोरंजन आदि के साधन भी बढ़ाते हैं.** यह आसपास के एक आकर्षण बन जाता है स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालय मेडिकल कॉलेज इंजीनियरिंग संस्थानों आदि से लाभ उठाने के लिए भी अनेक व्यक्ति विशेष कर आसपास के प्रति के लड़के नगरों में आकर रहने लगते हैं एवं नगरों के विकास से अपना योगदान देते हैं औद्योगिक नगरों में मनोरंजन का भी व्यापरीकरण होता है केवल सिनेमा से ही करोड़ों रुपए का व्यापार होता है इन सबसे मनोरंजन का भी व्यापरीकरण होता है इन सब मनोरंजन के साधनों से संबंधित विविध उद्योग धंधे व्यापार तथा वाणिज्य के बढ़ने के साथ-साथ नगरों का भी उत्तरोत्तर विकास होता रहता है

F . **औद्योगिकरण ग्रामीण दस्तकारी को नष्ट करता है.**औद्योगीकरण की भारत में एक विशेषता यह रही है कि नगरों के उद्योग बांधों में उन्नति के साथ-साथ ग्रामीण दस्तकारी नष्ट होती गई और इन द अधिकारियों में लगे हुए विकारीकर बेकार हो गए अतः इन्हें नौकरी की खोज में आसपास के नगरों में ही जा बसा पड़ा

प्रश्न 6. ब्रिटिश भारत में आधुनिक उद्योगों के विकास पर लेख लिखिए

Ans. 19वीं के मध्य तक अंग्रेजों ने कारखाना उद्योग की और बहुत कम ध्यान दिया और जब ध्यान दिया तो केवल उन्हें उद्योगों को चुना जिनमें कम से कम समय में अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सके इस नीति का परिणाम यह हुआ की मुख्य हल्के किस्म के एवं उद्योग उपभोग वस्तुओं से संबंधित इन्हें किन्हे जो भी स्थापित हो सके और औद्योगिक विकास की गति धीमी तथा बनी रही

प्रथम विश्व युद्ध के बाद देश की औद्योगिक विकास के इतिहास में एक नया अध्याय का सूत्रपात हुआ देश के उद्योगों में अपेक्षाकृत अधिक तेजी से प्रगति हुई युद्ध काल में लोगों ने भारी लाभ कमाया था अतः युद्ध के बाद बड़ी मात्रा में पूंजी औद्योगिक क्षेत्र की ओर खींचने लगी राष्ट्रीय जागृति से भी देश के औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन मिला लेकिन औद्योगिक विकास की त्रिज्या गति का सबसे महत्वपूर्ण कारण था सरकारी औद्योगिक नीति में परिवर्तन प्रथम महायुद्ध कल तक भारतीय उद्योग सरकारी सहायता के बिना अपने ही बल पर कार्य कर रहे थे किंतु **1923** में इस दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया जब भारत सरकार ने प्रथम राजकोषीय आयोग की सिफारिश से स्वीकार करके कुछ चुने हुए उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण प्रदान किया इस प्रथम भारतीय राजकोषीय आयोग की नियुक्ति संत **1921** में की गई थी और **1923** में इसकी सिफारिश पर अमल शुरू हुआ

नवीन नीति के प्लास्टर **1924** से **1939** के बीच सरकार ने लोहा एवं इस्पात सूती वस्त्र परसों चीनी माचिस कागज आदि अनेक प्रमुख उद्योगों को संरक्षण प्रदान किया भारतीय उद्योगपतियों ने नई नीति का लाभ उठाते हुए संरक्षित उद्योगों का तेजीका विकास किया कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारतीय उद्योगपतियों ने विदेशी प्रतिस्पर्धा को प्राप्त कर दिया और लगभग संपूर्ण भारतीय मंडी पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया यद्यपि **1923** से प्रारंभ की गई सरकारी नीति अनेक कर्मियों का शिकार थी तथापि उसने भारतीय उद्योगों को निश्चित रूप से गति प्रदान की

1914 के पूर्व प्रमुख उद्योग. अंग्रेजी शासन का एक प्रभावी है पड़ा कि उन्होंने **19**वीं साड़ी के उत्तरार्ध में मशीनों द्वारा **40** बड़े पैमाने के आधुनिक उद्योगों की स्थापना की इस विषय में यह तथ्य युग है कि इन आधुनिक उद्योगों की स्थापना भी भारतीयों के लाभ के लिए ही नहीं अपितु ब्रिटिश हितों को ध्यान में रखकर की गई थी उधर नाथ रेलवे का विकास भारत में इसलिए किया गया था कि इंग्लैंड में ज्यादा से ज्यादा कच्चा माल भेजा जा सके तथा वाहन निर्माता माल भारत के कोने-कोने तक पहुंचा जा सके ब्रिटिश काल में निम्नलिखित उद्योगों का विकास हुआ

रेलवे की स्थापना.भारत में अंग्रेजों ने रेलवे यातायात का प्रारंभ एवं विस्तार एक औद्योगिक इकाई के रूप में किया यहां रेलवे का निर्माण लड़ डलहौजी के शासनकाल में निजी कंपनियों द्वारा शुरू किया गया लड़ डलहौजी रेलवे निर्माण की एक प्रमुख अभिप्रेरणा का उल्लेख अपनी एक प्रसिद्ध टिप्पणी में किया है वह कहता है इनकी स्थापना से भारत को व्यवसायिक एवं सामाजिक लाभ होंगे गिनती नहीं की जा सके शक्ति इंग्लैंड में भारतीय हुई की मांग में वृद्धि हो रही है दूर के खेतों से बंदरगाहों तक इसे ले जाने में समुचित साधन उपलब्ध हो तो पर्याप्त परिणाम में अच्छे किस्म की दूरी प्राप्त की जा सकती है भारत के दूरस्थ बाजारों में भी ब्रिटिश माल की मांग बढ़ रही है

1. सूती वस्त्र उद्योग.

2. पटसन उद्योग.

3. लोहा में इस्पात उद्योग

4. शीशा उद्योग.

5. कोयला खान उद्योग.

6. कागज उद्योग.

7. चीनी उद्योग.

8. चमड़ा उद्योग.

9. अन्य उद्योग.

निष्कर्ष. उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्णित कल में भारत में उद्योगों का विकास हुआ था चाहे इसका उद्देश्य भी ब्रिटिश हितों की पूर्ति करना था परंतु आधुनिक भारत के निर्माण के लिए यह एक हितकारी कदम साबित हुआ परंतु भारत में औद्योगीकरण की यह प्रक्रिया काफी धीमी रही थी

प्रश्न 7. औपनिवेशिक काल में भारत में डाक तथा टेलीग्राफ़ के विकास पर प्रकाश डालिए

Ans. डाक तथा संचार प्रणाली का प्रचलन मध्यकालीन भारत में ही हो चुका था उसे समय स्थान पर बनी सारी डाकघर का काम करती थी मुगल सरकार की ओर से यह व्यवस्था की गई थी कि प्रत्येक सारी पर दो घुड़सवारों को रखा जाता था इन्हें हरकारा की भी संज्ञा दी जा सकती है जो डाक को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने का कार्य करते थे इस मुगलकालीन व्यवस्था से आगरा से लाहौर तक सूचना या डाक को राजाओं तक मात्र एक दिन में पहुंचा दिया जाता था इसके साथ-साथ सूचना के आदान-प्रदान के लिए कबूतरों का भी प्रयोग किया जाता था मुगलकालीन इस संचार व्यवस्था का आधार शेरशाह सूरी की डाक व्यवस्था थी शेरशाह के समय में भारत में डाक चौकिया थी जहां से घुड़सवार बीच मिल तक डाक ले जाते थे चिट्ठी पाने वाले को डाक लाने को पैसा देना पड़ता था प्लस स्वरूप निर्धारित शुल्क से अधिक देने पर ही चिट्ठी मिलती थी उसे समय कुछ निजी संस्थाएं भी इस तरह से कार्य करती थी परंतु वे विशेष रूप से व्यापारी तथा कुलीन वर्ग के लिए ही इस तरह के कार्यों को करते थे

कंपनी के अंतर्गत डाक व्यवस्था का विकास. 1853 54 इसी में एक डाक तार विभाग की स्थापना की गई कंपनी का प्रशासन क्षेत्र लगातार विकसित होता जा रहा था जिसके कारण आधुनिक संचार प्रणाली का विकास करना उसके लिए अत्यंत आवश्यक हो गया था प्रशासन पर पकड़ बनाने के लिए डॉक का महत्व काफी ज्यादा था कंपनी ने सन **1688** में कोलकाता में एक डाकघर की स्थापना की इस स्थान से कंपनी अपनी बस्तियों का कारखाना प्रशासनिक सूचना भेजने का कार्य करती थी इस तरह का अगला प्रयास **1712** में किया गया जब मद्रास के सैनिक कोर्ट जॉर्ज किले से बंगाल के गवर्नर ने डाक तार भेजने की व्यवस्था की **1872** इसी में बंगाल के व्यापारियों तथा जमीदारों ने

इसी तरह के एक विभाग की स्थापना की ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी इस तरह की निजी संचार व्यवस्था की मदद प्राप्त की उन्होंने इन हरकरो की सहायता से अपनी सूचनाओं आपस में आदान-प्रदान की थी

भारत में डाक एवं तार सुधारो में पहला का श्रेय लॉर्ड डलहौजी को जाता है उसने रेलवे की तरह डाक तार व्यवस्था में भी व्यापक सुधार किया इससे पूर्व देसी रियासतों की अलग-अलग डाक व्यवस्थाएं थी परंपरागत डाक व्यवस्था केवल विशिष्ट वर्गों के लिए थी तथा इसका प्रचलन सीमित पैमाने पर था भारत में अंग्रेजों ने भी अपने निजी डाक व्यवस्था स्थापित की परंतु मध्य तथा गरीब वर्गों के लिए डाक व्यवस्था नहीं थी एक स्थान से दूसरे स्थान तक डाक पहुंचने में काफी समय लगता था इन कमियों को दूर करने के लिए लाडला जी ने **1854** ईस्वी में पोस्ट ऑफिस अधिनियम पारित किया इस अधिनियम की मुख्य विशेषताओं को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

1. तीनों प्रेसीडेंसी में स्थित डाकघर की देखरेख के लिए एक डाक महानिदेशक नियुक्त किया गया

2. देश में पहली बार अधिकृत डाक टिकटों का प्रचलन आरंभ किया गया

3. प्रत्येक पात्र को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक भेजने के लिए दो पैसे के टिकट का प्रावधान किया गया

4. चिट्ठी पर टिकट लगाना आवश्यक था जिसका मूल्य भेजने वाले को चुकाना पड़ता था

5. डॉकघर सरकार के होते थे तथा प्रत्येक प्रांत में एक पोस्टमास्टर जनरल की नियुक्ति की गई

6. डाक व्यवस्थाओं पर सरकारी नियंत्रण स्थापित किया गया

7. अंतर्देशीय पार्सल सेवा की शुरुआत की गई

8. प्रत्येक डाकघर में सरकारी कर्मचारियों की नियुक्ति की गई

9. संपूर्ण डाक व्यवस्था को डायरेक्टर जनरल आफ पोस्ट ऑफिस के अधीन रखा गया

ताज शासन के अधीन डाक व्यवस्था का विकास. 1858 ईस्वी में महारानी की घोषणा के साथ ही भारत में से कंपनी के शासन का अंत हो गया तथा ब्रिटिश संसद अथवा ताज का शासन आरंभ हो गया अब भारत में सरकार की जवाब दे ही पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गई **19**वीं के अंत में **80000** मिल का क्षेत्र पोस्ट सेवा में घीरा हुआ था तथा प्रत्येक वर्ष **23000** डाकघर से **36** करोड़ पत्र जाते थे ताज के शासन में के अधीन डाक व्यवस्था के विकास के मुख्य पहलुओं को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

1**. विदेशी विदेशी धाम चलती भेजो कुछ माफ कर दिया गया**

2. ब्रिटिश सामराज्य विरोधी डॉक सामग्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया

3. अश्लील सूचना भेजने वाले की ठंड का प्रावधान किया गया

4. सूचना साधन उपलब्ध करवाने वाले संसाधनों का पंजीकरण करवाना आरंभ किया गया

5. डाकघरो में डाकखातों डाकबीमा तथा मनी ऑर्डर की सुविधा उपलब्ध की गई

6. 1854 इसी में डाकघरों में तार व्यवस्था का भी आराम कर दिया क्या

7. 19 शताब्दी की अंतिम दशक में डाक व्यवस्था का भी काफी तेज से विकास हुआ

औपनिवेशिक भारत में तार का विकास. भारत में ब्रिटिश सामराज्य की सुरक्षा का आधार सेना पुलिस तथा नागरिक सेवा रूपी स्तंभ थे इसमें आपसी समझ में स्थापित करने के लिए तीव्र सूचना पहुंचाने वाले माध्यम की अत्यंत आवश्यकता थी गोपीनए सूचनाओं को परस्पर संबंधित विभाग में तेजी से पहुंचाना और भी ज्यादा आवश्यक था इसलिए भारत में अपने हितों की पूर्ति के लिए औपनिवेशिक सरकार ने तार व्यवस्था की विकास का भी विशेष ध्यान दिया था सबसे पहले तार व्यवस्था कि शुरुआत **1839** में सर विलियम ओ सगुणनेशीय द्वारा निजी स्तर पर कलकत्ता और डायमंड हारबर के बीच की थी

1857 ई के विद्रोह में तार व्यवस्था की उपयोगिता तथा महत्व को अंग्रेजी सरकार के सामने स्पष्ट कर दिया था यह तार व्यवस्था की तीव्रता का ही परिणाम था की अंग्रेजी सी विद्रोह होने वाले स्थान तक आशा से पहले पहुंच जाती थी असफल बनाने में इस व्यवस्था की भूमिका पड़ी है कि व्यापार व्यवहार नीचे के विकास में भी तर व्यवस्था ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की **1860** ई तक तार व्यवस्था के विकास की काफी तेज गति पकड़ ली थी **1866** ईस्वी में सरकार द्वारा तार टिकटों का प्रचलन भी आराम कर दिया गया भारत में द्वितीय विश्व युद्ध से पहले टेलीफोन का अधिक प्रचलन नहीं था परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसका महत्व काफी बढ़ गया टेलीफोन का ज्यादा प्रचलन व्यापारियों उद्योगपतियों तथा सरकारी दफ्तरों तक की समिति था अधिक व्यवस्था होने के कारण उसे समय सामान्य रोग इसके प्रयोग से दूरी थे

प्रश्न 8. दादा भाई नौरोजी के अनुसार धन की निकासी किस-किस तरह से हुई

Ans.भूमिका तथा पृष्ठभूमि.भारतीय उपनिवेश अर्थव्यवस्था में के विश्लेषण के लिए सबसे अच्छा अध्याय आज भी आरपी दत्त जी की पुस्तक इंडिया टुडे को समझा जाता है उन्होंने कार्ल मार्क्स की टिप्पणी के साथ हमारे देश के ब्रिटेन द्वारा किए गए शोषण की आवश्यकताओं का सिद्धांत दिया

धन निष्कासन का अर्थ. धन के भाव के सिद्धांत का केंद्र बिंदु यह है कि भारत के राष्ट्रीय उत्पाद का एक हिस्सा भारत में पूंजी निर्माण या भारत के लोगों के लिए उपभोग के लिए उपलब्ध नहीं रहता परंतु यह इंग्लैंड की ओर बिना किसी आर्थिक व्यापारिक या भौतिक लाभ के लिए दिया जाता था दूसरे शब्दों में यह भारत से इंग्लैंड की ओर एक तरफ धन का हंतातरण था

धन की निकासी. भारत में कार्ल मार्क्स ने बिस्तार के तीन चरण बताएं

A. 1757 से **1813** का वाणिज्यवादी काल

B 1813 से **1858** का समय जब औद्योगिक पूंजी का स्वतंत्र व्यापारियों के माध्यम से अत्यधिक शोषण हुआ था इस दौरान भारत को ब्रिटिशों की औद्योगिक वस्तुओं के बाजार में बदल दिया गया और वहां से अधिक कच्चा माल प्राप्त किया जाने लगा

C तृतीय चरण में 1858 के बाद भारत में द्वितीय साम्राज्यवाद स्थापित किया गया जब बैंकों आयात निर्यात कंपनियां एजेंसी हाउस इत्यादि द्वारा वित्तीय नियंत्रण स्थापित हुआ

प्लासी की लड़ाई के बाद कंपनी द्वारा भारत में लूट का कार्य शुरू किया गया लाइव ने खुद स्वीकार किया था कि द्वैध शासन के समय में कंपनी और कर्मचारी कंपनी के भविष्य की ओर बिना ध्यान दिए व्यक्तिगत उपहार लेने के सिवा कुछ नहीं सोचते थे प्रत्येक नवाब या नरेश की नियुक्ति पर उससे ज्यादा से ज्यादा धन भेट या नज़राने के रूप में भेट किया जाता था व्यापारिक अधिकारों का खुलेआम दुरुपयोग किया गया 1765 के बाद कंपनी के कर्मचारी खुलेआम धन इकट्ठा करके उसे नकली हुडियों द्वारा यूरोप भेजने लगे अनेकों फ्रांस डेनमार्क के तथा अन्य व्यापारियों को कर्मचारियों द्वारा चोरी छुपे ऋण दिया जाता था जिससे वह भारतीय माल खरीदकर यूरोप में भेजते थे और वहां कर्मचारियों के खातों में ऋण की अदायगी करते थे

आर्थिक निकास के तत्व. साम्राज्यवादी शासको ने भारत को हर तरह से लूटने की कोशिश की भारतीय प्रशासन ब्रिटिशों के हाथ में था व केवल अंग्रेजों खेत में चलाया जाता था यह निकास कोशिश प्रकार से था

1. गृह खर्च व्यय. गृह व्यय उसे व्यय या खर्च के रूप में था जो भारत राज्य सचिव तथा उसे संबंध व्यय के रूप में होता था 1857 की क्रांति से पहले यह है गृह खर्च भारत के औसतन राजस्व के 10 से 18% के रूप में होता था 1857 के बाद यह काफी बढ़ गया और 1897 1901 के बीच या 24% हो गया 1920 21 के बीच एक ग्रह खर्च और ज्यादा हो गया और केंद्रीय सरकार के समस्त राजस्व का 40% बन गया इस ग्रह व्यय के मुख्य तत्व निम्न थी

A . **अंग्रेज कंपनियों के भागीदारों को लाभ.** 1833 के चार्टर एक्ट में यह प्रावधान था कि कंपनी के भागीदारों को भारतीय राजस्व में से 1874 तक 6 लाख 30000 फोन वार्षिक दिए जाएंगे 1874 में 45 लाख पाउंड का रेट दिया गया ताकि कंपनी का शेर सरकार दोगुनी भाव पर खरीद सके और इस रन का ब्याज चलता रहा

B . **विदेश में प्राप्त सार्वजनिक ऋण.** अंग्रेज कंपनी ने अपने सिर पर 7 करोड़ फोन ट्रेन चढ़ा लिया था जो राय उन युद्ध में लगाया गया जिनके द्वारा भारत में कंपनी के क्षेत्र का विस्तार किया गया अथवा उन उद्योगों में लगाया गया जो अंग्रेजी में कंपनी की क्षेत्रीय डोलता का स्वरूप है 1900 में इस सार्वजनिक जनन की मात्रा 22 करोड़ 40 लाख कौन थी यह भी ठीक है कि इसमें से कुछ रन उत्पादक उद्देश्यों के लिए लिया गया था जैसे रेलवे सिंचाई के लिए योजनाएं तथा अन्य सार्वजनिक कार्य

C . **असैनिक व सैनिक खर्च.** इसमें वे सभी खर्च शामिल थे जो ब्रिटिश पदाधिकारी को पेंशन तथा अवकाश के लिए मिलते थे इसके अलावा लंदन में स्थित इंडिया ऑफिस के संस्थापक तथा संचालन पर हुए और ब्रिटिश युद्ध के सचिवालय को दिए जाने वाला व्यय भी शामिल था यह सभी व्यय इसलिए थे क्योंकि भारत विदेशी दासता के फंदे में झगड़ा हुआ था

D . **ब्रिटेन में भंडार वस्तुओं की खरीद.** भारत राज्य सचिव तथा भारत सरकार इंग्लैंड में करोड़ों रुपए का माल सैनिक असैनिक तथा समुद्री विभाग के लिए ब्रिटिश मंडियो से खरीदते थे **1861** और **1920** के बीच यह है वह ग्रह खर्च का **10** पॉइंट **2%** होता था

E . **नागरिक खर्च.** इन खर्चों में बहुत सारी छोटी बड़ी जितिया शामिल थी जैसे ब्रिटेन में भारतीय कार्यालय का खर्चा सेवानिवृत अधिकारी की पेंशन अनेक भत्ते भारत के शुद्ध प्रतिशत राजस्व का **12%** खर्च आता था

2. **इंश्योरेंस विदेशी बैंक नो वाहन कंपनियां.** इन कंपनियों ने भारत में करोड़ों रुपया लाभ के रूप में कमाया इस धन को ले जाने के अलावा उनकी सबसे बड़ी देश को की जाने वाली हानियां थी कि इन सब कंपनियों ने भारतीय कंपनियों को ऊपर नहीं उठने दिया

3. **विदेशी पूंजी निवेश पर दिया जाने वाला ब्याज.** भारतीय राष्ट्रीय आय से एक महत्वपूर्ण निकास था व्यक्तिगत विदेशी पूंजी निवेश पर दिया जाने वाला ब्याज और लाभ **20**वीं शताब्दी में निजी क्षेत्र की काफी बड़ी पूंजी का भारत में निवेश किया गया दोनों युद्धों के बीच **30 60** करोड़ रूपया प्रतिवर्ष बाहर जाता था वास्तव में विदेशी पूंजीपति वर्ग भारतीय औद्योगिक विकास में रति भर भी रुचि नहीं रखता था अपितु उसने भारतीय औद्योगिक विकास के रास्ते में हर संभव रूप से रुकावट डाली और भारतीय साधनों का अपने हित में प्रयोग किया

निकास के सिद्धांत का आलोचनात्मक मूल्यांकन. इस सिद्धांत को नकारने के विचार की उत्पत्ति इसके स्वयं के प्रतिपादित होने के समय से ही हो गई थी विशेष बात ही है कि धन के बहाव के अस्तित्व के विषय में अधिकतर लोग सहमत थे इसकी आलोचना करने वालों में मारीसन एवं लॉर्ड कर्जन का विश्वास था कि भारत से धन बाहर जाने की बजाय भारत में धन बाहर से आता है

1. **व्यापारिक शर्तों का भारत के प्रतिकूल रहना.** धन के बाह्य प्रभाव ने उन परिस्थितियों को मजबूत बना दिया जिनमें व्यापार की शर्तें भारत के विपक्ष में रहने लगी भारत को अपने निर्यात माल का मूल्य कम रखना पड़ा जबकि आयात माल का काफी ज्यादा भुगतान किया गया भारत के परंपरागत उद्योग सौदेबाजी की अपनी शक्ति को पूरी तरह खो बैठे अतः विदेशी व्यापारियों और उनके एजेंट के हाथों उन्हें बहुत सस्ते दामों में अपनी वस्तुएं बेचनी पड़ी

2. **तकनीकी ज्ञान का निर्गम.** धन की निगम ने भारत को आर्थिक पतन के मार्ग पर लपटका यदि हिंदुस्तान से वसूल की गई आए भारत के ही आर्थिक विकास में लगाई जाती तो हिंदुस्तान कभी का औद्योगिक देश बन गया होता लेकिन विदेशी शासको ने केवल भारत के शासन का मूल ही वसूल नहीं किया बल्कि बदले में भारत के आर्थिक विकास के लिए भी कुछ नहीं किया जो भी कुछ प्रयास हुए थे केवल अंग्रेजों खेतों के लिए थे अत है उनका अपेक्षित लाभ देश को नहीं पहुंचा यही कारण था कि देश को लूटने वाले अंग्रेज जब हिंदुस्तान छोड़कर गए तो वह भारत विभाजन की कीमत पर मिला आजाद भारत टिप्पण अवस्था में था राष्ट्रीय सरकार ने देश को सजाया संवारा और आज लगभग **56** वर्ष के स्वाधीनता कल में ही देश समृद्धि के उन दरवाजा पर खड़ा है जिनकी और वह पिछले सैकड़ो वर्षों से झांक भी नहीं सका था

3. **करो का बोझ.** भारत से धन के इस बाह्य प्रभाव के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास रुक रहा यह बहुत कुछ गतिहीन दिशा में पड़ी रही फल स्वरुप गरीबी और बेकारी की समस्याएं अधिक गंभीर होती गई और समय के साथ-साथ देश के आर्थिक विकास का कार्य जटिल तार बांटा गया आर्थिक समृद्धि के विनाश में भारतीयों में सामाजिक और राजनीतिक दुर्बलता को बढ़ाया अतः स्वाधीनता के संघर्ष का रास्ता कठिनाइयों से भर गया

4. **पूंजी का संचय न हो पाना और देश की गरीबी का बढ़ना.** आर्थिक साधनों के निगम के चलते पूंजी के संचय को गहरा धक्का लगा और देश की गरीबी लगातार बढ़ती चली गई देश के चिन्ह होते हुए आर्थिक साधनों एवं विदेशी नौकरशाही का भारी खर्च अधिक लड़ा जाता रहा और इस प्रकार या पूंजी का प्रभाव या निगम भारत हेतु काफी विनाशकारी सिद्ध हुआ जनता की बढ़ाने की शक्ति लगभग खत्म हो गई यदि आर्थिक प्रक्रिया सामान्य तौर पर चलती रहती तो धन देश से बना रहता और पूंजी का शोध संचय आसान होता लेकिन आर्थिक प्रभाव ने लाभ और बचत का पंजीकरण करना संभव बना दिया

5 **नैतिक निर्गम को जन्म.** आर्थिक निगम ने नैतिक निगम को विकसित किया दादा भाई नौरोजी ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि देश में अंग्रेज अधिकारियों को ज्यादा से ज्यादा नौकरियां दी गई जिनका दूसरा तात्पर्य यह था कि इतनी संख्या में भारतीय लोग नौकरियों से वंचित रह गई साथ ही यह भी हुआ कि ने भारतीय धन बचा सकते थे और नहीं उसे पूंजी के रूप में प्रयुक्त कर सकते थे यह नहीं अंग्रेज अधिकारी और टेक्नीशियन ऊंचे ऊंचे पदों से निव्रत होकर जब इंग्लैंड लौटते थे तो अपने साथ अपना राजनीतिक प्रशासनिक और तकनीकी अनुभव भी साथ ही ले जाते थे

6. **विदेशी पूंजी का प्रवेश और देश का शोषण.** भारत को तो पूंजी संख्या की दृष्टि से अच्छा बनाया गया जबकि दूसरी ओर विदेशी पूंजी को भारत में एकाधिकार लाभ मिलते थे भारत से जो धन इंग्लैंड पहुंच वह धन वापस विदेशी पूंजी के रूप में भारत लौट आया जिसने भारत का शोषण किया इस प्रकार भारत की पूंजी एक दरवाजे से निकलकर इंग्लैंड में गई और दूसरे दरवाजे से विदेशी पूंजी के रूप में भारत लौट आई

7. **देश के औद्योगीकरण के लिए आर्थिक साधनों का अभाव.** धन के लगातार बाह्य प्रभाव के कारण भारत के पास साधनों का अभाव होता गया अतः औद्योगिकरण में बाधक पड़ी भारतीय धन से ब्रिटेन के उद्योग फल के फलते गए उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं को भारतीय बाजारों में भर दिया गया जिस देश की औद्योगिक क्षमता को आघात लगा अंग्रेजी सरकार की नीति रही कि भारतीय अपने देश के औद्योगीकरण की दिशा में यथासंभव पूंजी का विनियोग न कर पाए

निष्कर्ष. उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि दादाभाई नौरोजी आरसी दत्त तथा इरफान हबीब जैसे स्वतंत्रता सेनानियों तथा इतिहासकारों ने जिस आर्थिक निकासी की बात को कहा तथा उसके पक्ष में प्रमाण दिए हैं वह पूरी तरह से सत्य प्रतीत होती दिखाई देती है भारत को गरीब बनाने में इस निकासी की बहुत बड़ी भूमिका रही है औद्योगिक विकास को इस निकासी ने बुरी तरह से बाधित किया इसके कारण राष्ट्रीय आंदोलन में तीव्रता पड़ी क्योंकि जैसे-जैसे भारत से धन का निष्कर्ष होता गया वैसे-वैसे भारतीयों का औपनिवेशिक शासन के प्रति विरोध बढ़ता ही गया

प्रश्न 9. ब्रिटिश शासन काल में प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली के विकास का वर्णन कीजिए

Ans. औपनिवेशिक भारत के आर्थिक विकास में प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की इस प्रणाली का विकास भारत में सीमित औद्योगीकरण की आवश्यकता की पूर्ति का ब्रिटिश पूंजीपतियों के हितों को ध्यान में रखकर किया गया था **19**वीं शताब्दी के अंतिम दशक तक यह व्यवस्था अपना विकसित रूप धारण कर चुकी थी भारतीय औद्योगिक व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए थी इस व्यवस्था का इस्तेमाल किया गया था **19**वीं शताब्दी भारतीय वाणिज्य वादी दूर के लिए जानी जाती है इस समय अंग्रेज का भारतीय व्यापारी अपनी अपनी पूंजी को लाभप्रद क्षेत्र में निवेश करने को ललैट थे अंग्रेज जॉन तथा भारतीय पूंजीपतियों के पास पूंजी का कोई अभाव नहीं था परंतु उनमें व्यावसायिक कुशलता की कमी थी प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली के माध्यम से व्यवसाय की इकाई के स्वामित्व के कार्यों के मध्य बंटवारा कर दिया गया प्रबंधक अभिकर्ता अपनी सेवाओं के बदले धन लेते थे उनकी सेवाओं के बदले दिए जाने वाला धन अभिकर्ता फॉर्म और उनकी सेवाएं लेने वाले कंपनी के बीच आपसी समझौते के आधार पर निर्धारित की जाती थी यह निश्चित राशि अलग-अलग मामलों में अलग-अलग होती थीसंयुक्त पूंजी कंपनियों के निर्माण में भी इस तरह की एजेंसी या लाभदायक सिद्ध होती थी एक कई बार किए गए पूंजी निवेश की गारंटी भी बन जाती थी तथा सामान की खरीद फरोक में दलाल की भूमिका भी अदा करती थी अपनी सेवाओं के बदले इन अभिकर्ताओं को कमीशन या एक मुक्त धनराशि प्राप्त होती थी अधिकतर इतिहासकार इस बात पर एक बात है कि यदि प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली भारत में विकसित ने हुई होती तो शायद ही कोई अंग्रेज भारत में अपनी पूंजी निवेश करता अधिकतर विदेशी कंपनियों ने इन एजेंटीयों में अपना विश्वास दिखाया तथा आने वाले समय में होने वाले मुनाफे ने इन एजेंसियों की साग को स्थापित कर दिया इन एजेंसियों ने अपनी कार्य कुशलता से सेवा लेने वाली कंपनियों के खर्चे को काफी हद तक काम कर दिया

प्रथम अभिकर्ता प्रणाली का उदय व विकास. 1833 सीसी के चार्टर एक्ट के बाद प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली का उदय स्वीकार किया गया स्टार से पहले सिर्फ ईस्ट इंडिया कंपनी का ही भारत के व्यापार पर एक अधिकार था परंतु **1833** के बाद अंग्रेज व्यापारियों के लिए भारत के द्वार खोल दिए गए इन लोगों ने काफी दिनों तक संघर्ष किया कि उन्हें भी भारत में व्यापार करने की अनुमति दी जाए उनका मानना था कि लाभ की दृष्टि से भारत से अच्छा पूंजी निवेश वाला देश नहीं हो सकता इसलिए **1833** ईस्वी में अनुमति मिलते ही इन व्यापारियों तथा पूंजी पतियों में भारत यह निवेश करने की हॉट लग गई परंतु इन नई पूंजी निवेशकों को भारत की परिस्थितियों तथा बाजार के स्वरूप का बिल्कुल ही ज्ञान नहीं था इसलिए ऐसे पेशेवर लोगों की जरूरत महसूस हुई जो उनकी कंपनियों के काम को देख सके तथा उन्हें मुनाफा देने वाली सलाह दे सके इन परिस्थितियों में भारत में प्रबंध अभिकर्ता प्रणाली का उदय हुआ जो समय के साथ अपने साथ स्थापित करती चली गई इस तरह की एजेंसियों में यूरोपियन तथा भारतीय दोनों तरह के लोग थे

प्रथम अभिकर्ताओं के कार्य. शुरुआत में इस तरह की एजेंसी की स्थापना मुंबई तथा कोलकाता जैसे शहरों में हुई थी आरंभ में इसकी शुरुआत कुछ ऐसे अंग्रेजों ने की थी जो लंबे समय से भारत में रह रहे थे तथा उनमें भारतीय बाजार

की समझ उत्पन्न हो चुकी थी उन्होंने भारतीय दो भाषाओं की मदद से अपने इस कार्य की शुरुआत की प्रबंध अभिकर्ता के रूप में उसे समय व्यक्तिगत स्वामी प्राइवेट साझेदारी प्राइवेट लिमिटेड तथा पब्लिक लिमिटेड जैसी कंपनियां काम कर रही थी इन कंपनियों के प्रमुख कार्यों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

1. दो एजेंसियां निश्चित कमीशन या धनराशि के बदले किसी व्यापारिक या औद्योगिक फॉर्म की देखभाल के साथ उसके प्रबंधन की जिम्मेदारी भी उठती थी

2. इन एसेंशियल ने नए उद्योगों जैसे जूट कोयला सीमेंट चीनी आदि के विकास में मैं तुम योगदान दिया

3. इन प्रबंध अभिकर्ताओं ने बैंकर्स की भूमिका का निर्वहन भी किया जिस समय औद्योगिक क्षेत्र में कोई निवेश नहीं करना चाहता था उसे समय उन्होंने वित्तीय जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली

4. यह एजेंसियां समान या उत्पादन की बिक्री खरीद तथा विशेषज्ञों की उपलब्धता संबंधी कार्यों में भी अपना योगदान देती थी

प्रथम अभिकर्ता प्रणाली के दोष. इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन एजेंसी ने व्यापारिक व औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी इन्होंने पूंजी निवेश के लिए उचित व सुरक्षित माहौल तैयार करने में सकारात्मक भूमिका का निर्वाह किया था उनके प्रयासों से व्यापारिक व औद्योगिक संचालन कार्यों में मितव्ययिता आई परंतु फिर भी इसमें काफी दोस्त थे जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है

1. इन एजेंसियों ने भारत के तीव्र औद्योगिक विकास को प्रभावित किया इनके कारण भारत में शुद्ध वित्तीय संस्थाओं का विकास नहीं हो पाया

2. इन एजेंसियों में भारतीय केवल दलाल या दुभाषिया की भूमिका में ही होते थे विशिष्ट वह प्रभावशाली पदों पर यूरोपीय की ही नियुक्ति होती थी इससे भारतीय व्यापारिक हितों को चोट पहुंची थी

3. कई बार प्रबंध एजेंसियों व्यापारिक कंपनियों से अनुचित लाभ उठाती थी यह लिखा हिसाब में झूठा घटा दिखाकर बेईमानी करती थी इससे उनकी साथ में कमियां आई

4. यह एजेंसियां अपने नियंत्रण का लाभ उठाकर कंपनी के आंतरिक मामलों में भी कई बार हस्तक्षेप करती थी वे शेयरो की सौदेबाजी भी करने लगी थी

5. इन्होंने पिछलियों की भूमिका के रूप में दो तरफ से धन कमाया पूंजीपति का धन अन्य को ब्याज पर देकर यह निवेश करता के साथ धोखा करने लगी थी

6 इन्होंने भारतीय तथा विदेशी निवेशकों पर अपना कठोर नियंत्रण स्थापित कर लिया था इन्होंने भारत की आर्थिक शक्ति का इस्तेमाल ब्रिटिश हितों के लिए किया

निष्कर्ष. उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन मैनेजिंग एजेंसियों ने अपने नियंत्रण में अनुभव का गलत इस्तेमाल किया यूरोपीय मैनेजिंग एजेंटीयों ने धीरे-धीरे व्यापारिक में औद्योगिक धर्म पर अपना शिकंजा करना आरंभ कर दिया उदाहरण के लिए इनका **22%** कंपनियां **33%** मिलन **32%** तकलों **30%** कार्बन तथा

कुल पूंजी के **33%** पद्यंत्र स्थापित था इस कारण से भारत का धन विदेशों में जाने लगा तथा भारत जैसा अमीर देश गरीबी के गर्त में डूबने लगा इन एजेंटीयों ने कई फर्मों के स्वामित्व को छीन लिया

प्रश्न10. आधुनिक काल में पर्यावरण आंदोलन पर प्रकाश डालिए

Ans. पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परी **+**आवरण परी का अर्थ है चारों ओर से और आवरण का अर्थ है जो ढके हुए या घिरे हुए हैं इस प्रकार शाब्दिक दृष्टि से पर्यावरण वह है जो हमारे चारों ओर विद्यमान है **डगलस महोदय के अनुसार** पर्यावरण उन सभी बाहरी शक्तियों एवं प्रभावों का वर्णन करता है जो प्राणी जगत के जीवन स्वभाव व्यवहार तथा परिपक्वता को प्रभावित करता है परंतु औपनिवेशिक सरकार की नियत तथा नीतियां इसके बिल्कुल ऋतिक थी उसने घुमंतू तथा आदिवासी लोगों का परंपरागत जीवन पूरी तरह से बर्बाद कर दिया उन्हें उनके परंपरागत क्षेत्र से खजूर दिया तथा स्वतंत्र भूमि को सरकार के अधीन ले लिया वन संपदा को सरकारी संपदा घोषित कर दिया अधिक राजस्व प्राप्त करने के लिए वन संपदा के इस्तेमाल पर अनेकों प्रकार के कर लगा दिए गए **19**वीं शताब्दी के बाद तो यह प्रक्रिया और भी तीव्र हो गई

1**. कंपनी शासन के अधीन पर्यावरण परिवर्तन.**

भारत में जिस समय ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन शुरू हुआ उसे समय अनेकों आदिवासी जातियां देश के विभिन्न भागों में वनों में निवास करती थी उनकी आजीविका का मुख्य साधन वन उत्पादन तथा कृषि में पशुपालन व्यवसाय थे कंपनी के शासन से पूर्व मराठा अपने नियंत्रण में आने वाले वन क्षेत्र से भूमिका तथा नजराना वसूल करते थे अंग्रेजो ने इसी परंपरा को आधार बनाकर इन क्षेत्रों पर अधिकार जताया तथा शुरुआती उन्होंने नजराना लेकर की धीरे-धीरे उनकी लालसा तथा लालच बढ़ता गया और उन्होंने वहां से भू राजस्व भी उगना शुरू कर दिया कोमलतू लोग वनों को साफ करके उसे भूमि पर कृषि का कार्य करते थे इस तरह वनों की विलुप्तता शुरू हो गई थी **19**वीं शताब्दी के मध्य तक प्राकृतिक वन संपदा पर औपनिवेशिक शासन का नियंत्रण स्थापित हो चुका था साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति के लिए वनों की अवैध कटाई जोरों पर शुरू हो चुकी थी वन संपदा को जहाज में भरकर जल मार्ग से यूरोप भेजा जा रहा था **1800** से **1830** के मध्य पश्चिमी घाट पर मुंबई में दिन की विकास कार्यों के लिए कंपनी के ठेकेदारों ने सागौन के जंगलों को काफी हद तक साफ कर दिया था बैराड़ के वनों को पाल्मर एंड कंपनी ने बुरी तरह से कैशलेस कर दिया**1853** ई के बाद भारत में रेलों के विकास की प्रक्रिया भी काफी तेज हो गई रेलवे लाइनों के नीचे बिछाने के लिए लकड़ी के स्लीपरों की काफी आवश्यकता थी उनकी पूर्ति के लिए रेल कंपनियों ने अंधाधुंध वनों की कटाई की रेलवे की स्थापना तथा विकास ने वन संपदा के व्यापार को काफी सरल तथा लाभदायक बना दिया अब लकड़ी के व्यवसाय में लगे लोग व ठेकेदार सरकार से ऊंची कीमतों पर लाइसेंस प्राप्त करते तथा वनों की कटाई से काफी लाभ कमाने लगी इन सब का स्वाभाविक परिणाम एक ही था वनों की समाप्ति

II तक शासन के अधीन पर्यावरण परिवर्तन

1857 ई के बाद भारत से कंपनी के शासन का अंत हो गया तथा भारत का शासन सीधा ब्रिटिश संसद अथवा तक के अधीन चल गया वनों की कटाई निरंतर जारी रही अंग्रेजी वन अधिकारी भ्रष्ट तरीके से धन कमाने लगे बेटे ठेकेदारों से मोटी रिश्वत लेकर उनको कंपनी और से सुरक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहे थे समुद्री जहाज के निर्माण रेलवे लाइनों के लिए स्लीपरों की आवश्यकता लोग प्रकरण के लिए ईंधन जैसी आवश्यकताओं ने लकड़ी की मांग काफी बढ़ा दी इंग्लैंड इसके लिए विभिन्न स्रोतों की तलाश करने लगा भारतीय सागवान की उपयोगिता तथा गुणवत्ता ने उन्हें भारत की ओर आकर्षित किया इस लकड़ी का इस्तेमाल समुद्री जहाज के निर्माण में किया जाता था इस कारण से इसकी विदेशी मांग काफी बढ़ गई तथा इसका निर्यात जोरों पर होने लगा इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार अधिक से अधिक कृषि क्षेत्र का विस्तार करना चाहती थी वनों की कटाई से सरकार को दोहरा लाभ हो रहा था एक तो वह वन संपदा को विदेशों में भेज कर अच्छा मुनाफा कमा रही थी तथा दूसरा वनों की सफाई से कृषि क्षेत्र में बढ़ोतरी हो रही थी कृषि क्षेत्र में बढ़ोतरी का सीधा अर्थ था सरकारी भू राजस्व में वृद्धि इसमें कोई शक नहीं है कि ओपन विश्व के शासन में सिर्फ अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए इस देश की महान वन संपदा को टेस्ट मैच कर दिया था

III वन विभाग की स्थापना तथा वन अधिनियम.

1847 ईस्वी में वन विभाग की स्थापना की गई 1865 इसमें एक और कदम उठाते हुए सरकार ने पूरे भारत के वनों के ऊपर एक विभाग स्थापित कर दिया इसमें एक कार्यकारी अधिकारी तथा वन अधिकारी की नियुक्ति की गई इनका कार्य वनों की देखभाल करना था 1878 ईस्वी में सरकार द्वारा एक और संशोधित धवन अधिनियम जारी किया गया जिसमें वनों को राज्य की संपत्ति घोषित कर दिया गया सरकार ने इस अधिनियम के माध्यम से लगभग 1400 वर्ग मील क्षेत्रफल पर वन भूमि को आरक्षित घोषित कर दिया वनों का प्रयोग अब सरकार और जनसाधारण के मध्य विवाद का विषय बन गया ग्रामीण समुदाय तथा आदिवासी समुदाय द्वारा इसका जोरदार विरोध किया गया परंतु सरकार ने दमन का सहारा लेकर इसे दबा दिया परंतु सरकार पर इसका कोई असर नहीं हुआ इस अधिनियम के तहत वनों को तीन श्रेणियां में विभाजित कर दिया गया किसका वर्णन इस प्रकार है

1. वनों की पहली श्रेणी में वे वन शामिल किए गए जिनमें उत्पादन काफी मूल्यवान थे सरकार ने इनको आरक्षित वनों का नाम दिया जिनका इस्तेमाल सरकार के बिना कोई नहीं कर सकता था

2.दूसरी श्रेणी में संरक्षित वन आते थे तथा इनका भी सरकार के ही अधीन रखा गया था इन वनों के इस्तेमाल के अधिकार नियम बनाए गए जिसमें राज्य अथवा सरकार की स्वीकृति अत्यंत जरूरी होती थी इसके द्वारा विशिष्ट वन प्रजातियों को संरक्षण तथा प्रोत्साहन देने की बात कही गई इनमें घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी लेने तथा पशु चारण चढ़ने पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया कुछ समय बाद उपनिवेश सरकार ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इनको भी आरक्षित श्रेणी के वनों में शामिल कर दिया

3. तीसरी श्रेणी में सामान्य वनों को रखा गया इनके इस्तेमाल का अधिकार कुछ शर्तों के साथ स्थानीय लोगों को प्रदान किया गया परंतु औपनिवेशिक सरकार ने इन वनों के विकास की तरफ को विशेष ध्यान नहीं दिया

वनों का विकास व उनके संरक्षण. वनों की उपयोगिता तथा उनके पतन को देखते हुए भारत में वनों के विकास तथा उनके संरक्षण की बहुत आवश्यकता है भारत की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए आवश्यक है कि देश का **33%** भाग वनों से ढका हुआ होना चाहिए जबकि वहां केवल **18%** भाग पर ही वन है इसके अनुसार पर्वतीय क्षेत्र में **60%** तथा मैदानी क्षेत्र में **20%** भाव पर वन होने चाहिए स्वतंत्रता के पश्चात इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए कई अभियान चलाए गए सन **1950** में ही चार करोड़ वृक्ष लगाए गए जिनमें से एक चौथाई वृक्ष पनप कर बड़े हुए
वन विभागों के वानर ओपन कार्यक्रमों के अतिरिक्त सामाजिक वानिकी फॉर्म वाणी की तथा उत्पादन वाणी की आदि कार्यक्रमों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र को बढ़ाने के लिए प्रयास आरंभ किए गए सन **1980** की अवधि में सामाजिक वानिकी के अंतर्गत **16.55** लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौधे लगाए गए थे इसी अवधि में फार्मेसी ने अंतर्गत **278.5** करोड़ पौधे लगाए गए परंतु वास्तविक प्रभाव जीवित पौधों से पड़ता है क्योंकि बहुत से पौधे सुरक्षा तथा जल के अभाव में मर जाते हैं इस संदर्भ में जनसाधारण को जागरूक करने की आवश्यकता है चिपको आंदोलन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण गैर सरकारी आंदोलन है सन **1983** की वन नीति के अंतर्गत वनों के बचाव पुनर्जन तथा विकास की प्रक्रिया में जनजातीय तथा वनों के आसपास रहने वाले लोगों को शामिल करने का विचार है

IV पर्यावरण पर वन विनाश के प्रभाव. प्रकृति प्रदत्त वन संपदा मानव जीवन के लिए जल और वायु की तरह अत्यंत उपयोगी है प्राचीन काल में हमारे ऋषि मुनियों ने सभी धर्म ग्रंथो वनों में तपस्या करके लिखे थे वन तपस्या और शिक्षा प्राप्ति के साधन थे बड़े विद्या स्थल गुरुकुल तथा आश्रम वनों में तथा नदियों के किनारे ही होते थे वनों में स्वतंत्रता से पशु पक्षी भी विहार करते थे वनों का शांत वातावरण मनुष्य के शारीरिक मानसिक बुद्धि तथा आध्यात्मिक विकास का प्रमुख आधार था वनों का प्रयोग मानव कल्याण के लिए ही होता था उनका विनाश नहीं करते थे
वनों की संरक्षण तथा पौधे लगाने की आज और अधिक आवश्यकता है जनसंख्या की वृद्धि के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है औद्योगीकरण के कारण सारा पर्यावरण दूषित हो गया है शेरों के उद्योग कारखाने यातायात के साधन कोयला इस्पात इत्यादि के कारखाने मानव के संपूर्ण वातावरण को अस्वस्थ कथा ने रहने योग्य बना दिया है इसलिए वन संरक्षण के अति आवश्यकता है पर्यावरण पर वनों के विनाश का प्रभाव निम्न प्रकाश से समझा जा सकता है

1. वनों के विनाश से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाता है जिससे मनुष्य के जीवन पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है

2.मौसम में भिन्नता आ जाती है कभी अतिवृष्टि कभी अनावृष्टि की अवस्था हो जाती है अधिक वर्षा तथा कम वर्षा दोनों ही दोषपूर्ण है दोनों ही काल की स्थिति पैदा कर देते हैं अन्य उत्पादन समाप्त हो जाता है भुखमरी चोरी लूट खसोट बेईमानी शत्रुता तथा इत्यादि का समाज में साम्राज्य हो जाता है

3. वनों का समाप्त करने से भूमि का कटा बढ़ जाता है जिस भूमि का उपजाऊ पान समाप्त हो जाता है खदान की कमी हो जाती है बाहर से अनाज मांगना पड़ता है जिससे राष्ट्र दूसरों पर आश्रित हो जाता है और समय आने पर उनके अधीन भी हो जाता है जिससे गुलामी का जीवन जीना पड़ता है

4. वन विभाग से वायु प्रदूषण बड़ा है वायु मंडल में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है जिससे मानव जीवन की जीने की आयु कम हो जाती है और शारीरिक विकार पैदा हो जाते हैं

5. वन विनाश से वर्षा तो कम होती ही है जिससे पानी की तरह जमीन में नीचे चली जाती है जिसे पीने के पानी का तथा कृषि के लिए पानी का संकट खड़ा हो जाता है जिसका फिर पैदावार पर बुरा प्रभाव पड़ता है

6. आंधी तूफानों की प्रचंदता बढ़ जाती है

7. भूमि बंजर तथा अधिक मरुस्थल बन जाती है

8. वर्षा की कमी से नदियों के पानी के प्रभाव की गतिविधि में बढ़ जाती है धीरे-धीरे नदियों में रेत मिट्टी जम जाती है नदियों की गति और धीमी पड़ जाती है जिससे नहरे में पानी नहीं पहुंचता और कृषि में सिंचाई नहीं हो पाती और पैदावार कम हो जाती है इससे भुखमरी तथा अनेक बीमारियां हो जाती है पशु पक्षी भी करने लगते हैं जिस से वायु प्रदूषण बढ़ जाता है

सारांश .यह है कि वन विनाश से पर्यावरण के तीनों प्रमुख घटकों वायु जल तथा भूमि में विकृति तथा प्रदूषण आ जाता है मौसम संबंधी हानिकारक परिवर्तन होने लगते हैं जो मनुष्य की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति को बहुत खराब कर देते हैं देश की प्रगति रुक जाती है ऐसी स्थिति में रसों को अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना असंभव सा लगता है इसलिए वन विनाश को रोकना बहुत आवश्यक है संभव हो सके तो मानव कल्याण की दृष्टि से अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए

प्रश्न11.भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश राज्य की परिणामों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए

Ans. भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण था अंग्रेजों ने भारत में कृषि व्यापार एवं उद्योग के प्रति जो नीति अपनाई उसे भारत एक आर्थिक उपनिवेश बन गया अंग्रेजों द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियों से भारत की परंपरागत अर्थव्यवस्था चिन्ह भिन्न हो गई भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रयोग इस ढंग से किया गया जिसे अंग्रेजी अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके **200** वर्षों के अंग्रेजी शोषण के परिणाम स्वरुप भारत के आर्थिक विकास के सभी रास्ते बंद हो गए तथा नई उभरने वाली शक्तियों को उभरने का मौका नहीं मिला अंग्रेजी आर्थिक नीतियों के निम्नलिखित प्रभाव पड़े

1. **भारतीय हस्तशिल्प उद्योग पर प्रभाव**. ब्रिटिश नीतियों के परिणाम स्वरुप भारत के नगरी हस्तशिल्प उद्योग बड़ी तेजी से समाप्त हो गए अंग्रेजी आर्थिक नीतियों से भारतीय हस्तशिल्प पर पड़े प्रभाव इस प्रकार थे.

1**. अनुद्योगिकरण**. **18** ई तक भारतीय उद्योग धंधे विश्व में सर्वाधिक विकसित थे क्योंकि अभी उद्योग केवल कुटीर उद्योग ही थे परंतु इसके पश्चात आश्चर्य जनक रूप से हथकरघा उद्योग पूरी तरह से नष्ट हो गए इसे

औद्योगिकरण कहा जाता है कंपनी के काल में जब भारतीय वस्तुएं इंग्लैंड में काफी लोकप्रियता प्राप्त कर रही थी तब अंग्रेज उद्योगपतियों तथा व्यापारियों ने अपने तैयार माल को बेचने के लिए अंग्रेजी सरकार पर दबाव डाला जिसके परिणाम स्वरुप सरकार ने **1818** इसी में कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया इससे बढ़िया अंग्रेजी छोटी माहिती भारतीय मंदिरों में बाढ़ आ गई परिणाम स्वरुप देश का उनका उद्योग ठाकुर हो गया दूसरी तरफ जुलाहों पर अनेक अत्याचार भी किए गए उन्हें सस्ती दरों पर अंग्रेज व्यापारियों के लिए कपड़ा बनाने के लिए बाधित किया गया इस प्रकार भारतीय हस्तशिल्प अनेक प्रतिबंधों के कारण पूरी तरह नष्ट हो गया

I। पुराने औद्योगिक नगरों का उजाड़ना.

II। भूमि कर बढ़ता बोझ.

IV. कारीगरों में गरीबी में भुखमरी.

2. व्यापार की अवनति. 1600 इसमें स्थापित ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य भारत से व्यापार करना था अंग्रेजों के आगमन से पहले भारत का व्यापार काफी विकसित था भारतीय वस्तुओं को विदेशों में भारी मांग थी भारत से सूती रेशमी एवं उन्हें कपड़े मसाले नील चीनी छोरा आदि सामान यूरोपीय देशों में जाता था तथा बदले में भारत में सोना एवं चांदी आता था अंग्रेजों ने धीरे-धीरे भारतीय व्यापार पर एक अधिकार कर लिया अंग्रेजों ने अपनी प्रतिद्वंद्वी अन्य यूरोपियन कंपनियों को पराजित करके उन्हें भारत से खड़े ऐड दिया **1757** ई या प्लासी की लड़ाई के बाद कंपनी अब भारत को प्रमुख राजनीतिक शक्ति बन गई तब व्यापारिक संबंधों में भी भारी परिवर्तन हुआ कंपनी के कर्मचारियों ने दस्तक प्रथा द्वारा भारतीय व्यापारियों को भारत के विदेशी व्यापार से हटा दिया कंपनी के कर्मचारियों ने दस्तक प्रथा का दुरुपयोग किया गया तथा वे अब नीचे व्यापार भी करने लगे जिससे भारतीय व्यापारियों का सामान बाहर जाना लगभग बंद हो गया कंपनी के कर्मचारी कई बार सारा माल स्वयं खरीद लेते थे और उन्हें थोड़ा-थोड़ा करके मुंह मांगे दामों पर बेचते थे

3 **पक्षपात पूर्ण आयात निर्यात नीति.** भारतीय अर्थव्यवस्था को अंग्रेजी अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य अंग्रेजों ने आयात निर्यात में भी भारतीयों के साथ भेदभाव किया भारतीय माल का इंग्लैंड में प्रवेश रोकने के लिए उसे पर **70** से **80%** तक चुनरिया लगाई गई जबकि इंग्लैंड की माल पर भारत में कोई चुंगी नहीं लगाई गई भारत से इंग्लैंड के उद्योगों में काम आने वाला कच्चा माल राई परसों नील चमड़ा छोरा आदि केंद्रीय याद किया जाने लगा जबकि इंग्लैंड से भारत में सूती में उन्हें कपड़े तथा मशीनों के पुर्जे आदि मंगवाए गए इससे पता चलता है कि इंग्लैंड के कारखाने का तैयार माल का उत्पादन आयात बढ़ रहा था तथा भारतीय सामान का निर्यात कर रहा था इस प्रकार पक्ष महत्वपूर्ण आयात निर्यात नीति से भारत का आर्थिक ढांचा बुरी तरह टूट गया

4**. कृषि पर प्रभाव.** कृषि भारत की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का प्रमुख आधार सही है ब्रिटिश शासको के काल में भी गांव का किसान जमीन का मालिक था अंग्रेजों के आने से पहले किस उपज का एक निश्चित भाग सरकार को देता था गांव के लोगों की आवश्यकताओं से संबंधित लगभग सभी प्रकार के व्यवस्थाओं से संबंधित लोग गांव में रहते थे

इस प्रकार गांव के लोगों को सभी वस्तुएं गांव में ही मिल जाती थी दूसरी तरफ विभिन्न व्यवसाययों को अनाज का भाग मिल जाता था इस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर थी परंतु अंग्रेजी शासको ने भारत की आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा भारतीय ढांचे को तोड़कर इसे औपनिवेशिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बना दिया अंग्रेजी आर्थिक नीतियों के कृषि आकर्षक पर न्यू प्रभाव पड़े

I. भूमि कर में वृद्धि.

II. शक्ति से लग।न इकट्ठा करना.

III. किसानों का ऋणी होना.

I V. भूमि पर बढ़ता हुआ बोझ.

V. भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व की स्थापना.

VI. भूमि का बटवारा.

VII. कृषि का वानिकीकरण.

VIII. कृषि का पिछड।पन.

IX. काल गरीबी वह भूखमरी.

5. **ग्रामीण स्वायत्तता का अंत.** अंग्रेजों के आगमन से पहले भारत के गांव आत्मनिर्भर थे गांव में ही दैनिक उपयोग की सभी वर्ष में प्राप्त हो जाती थी जिन लोगों के पास जमीन नहीं थी उन्हें भी अनाज का एक निश्चित भाग विभिन्न वस्तुओं के बदले मिल जाता था क्योंकि गांव में विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों की संख्या लोहार सुंदर समाज धोबी नई तेली कुमार आदि काफी थी ग्रामीण उद्योग काफी विकसित अवस्था में थे इसे हजारों लोग अपनी आजीविका चलाते थे अपितु गांव की वस्तु बाहर भी निर्यात होती थी अंग्रेजों ने अपनी वस्तु बचने के लिए गांव के दस्तकारी उद्योग को नष्ट कर दिया आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थ संतरा के दो आधार स्तंभों ग्रामीण कृषि तथा ग्रामीण उद्योग के संतुलन के नष्ट हो जाने से आत्मनिर्भर गांव के अस्तित्व का आर्थिक आधार कमजोर पड़ गया इस प्रकार अंग्रेजी आर्थिक नीतियों ने गांव की स्वालंबी अर्थव्यवस्था को चिन्ह कर दिया

6. नए सामाजिक वर्गों का उदय. ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के परिणाम स्वरुप भारत के सामाजिक क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए अंग्रेजी सरकार की कृषि एवं भू राजस्व संबंधी नीतियों के परिणाम स्वरुप नए सामाजिक वर्गों का उदय हुआ स्थाई बंदोबस्त के फल स्वरुप पुराने जमीदारों का अंत हो गया तथा नया जमीदार वर्ग अस्तित्व में आ गया यह जमीदार अपनी जमीनों से दूर शहरों में निवास करते थे तथा केवल फसल पकने के समय ही गांव में आते थे भू राजस्व की अत्यधिक ऊंची दलों को पूरा करने के लिए किस गांव के धनी व्यक्ति से कर्ज लेते थे जो ब्याज की ऊंची दलों पर दरों पर हल बैल एवं बीज तथा लगा चुकाने के लिए पैसे उधार देता था किस उनके चंगुल में फंसकर धीरे-धीरे अपनी जमीन है उनके पास गिरवी रखने लगे इस प्रकार महाजन या साहूकार वर्ग का उदय हुआ अंग्रेजी व्यापारिक नीतियों के परिणाम स्वरुप भारत का हस्तशिल्प उद्योग ठप हो गया जिसके कारण इन उद्योगों में काम

करने वाले श्रमिक खेती में श्रमिकों के रूप में काम करने लगे इस सिक्रेसी श्रमिक वर्ग का उदय हुआ आधुनिक उद्योगों के विकास के साथ-साथ भारत में मजदूर वर्ग का उदय हुआ

7**. भारतीय धन की निकासी.** भारत में अंग्रेजी शासन की आर्थिक नीतियों का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव भारतीय धन की निकासी था धन निष्कासन का अर्थ था भारतीय पूंजी व्यवस्थाओं का भारत से बाहर इंग्लैंड जाना तथा उसके बदले में भारत को कुछ भी प्राप्त नहीं होना था इस प्रकार वह धन जो भारत से बाहर चला जा रहा था तथा इसके बदले में भारत को कुछ भी प्राप्त नहीं होता था वह धन का निष्कासन कहलाता है

8. **भारत में आधुनिक उद्योगों की स्थापना.** ब्रिटिश शासन ने भारत में निर्माण आत्मक भूमिका भी अदा की चाहे यह आंशिक रूप से ही क्यों ना हो इंग्लैंड में पूर्ण औद्योगीकरण के पश्चात वहां का पूंजीवाद वित्तीय परिवर्तित हो चुका था अब ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था की स्थिति या ऐसी हो गई थी कि वह पूंजी निवेश से लाभांश बहुत कम प्राप्त होता ब्रिटिश पूंजीपतियों ने अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए भारत में बीमा कंपनियां बैंक पर एजेंसी वह आयात निर्यात कंपनी के माध्यम से पूंजी लगाई दूसरी तरफ **19**वीं साड़ी के मध्य तक भारत का हासिल पूरी तरह टूट गया था तथा परिवहन एवं संचार व्यवस्था के विकसित हो जाने से पूरा भारत एक बहुत बड़े बाजार के रूप में खुला था ऐसी स्थिति में कुछ विदेशी पूंजीपति भी उद्योग में पूंजी लगाने के लिए सामने आए इस प्रकार निशु शादी के मध्य के पश्चात भारत में देसी में विदेशी पूंजी से आधुनिक उद्योगों का विकास हुआ

9. यातायात एवं संचार के साधनों का विकास. अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के परिणाम स्वरुप भारत में यातायात एवं संचार के साधनों का विकास हुआ भारत में ब्रिटिश पूंजी का निवेश करके अत्यधिक लाभ कमाना था प्रशासनिक दृष्टि से भारत की ओर अधिक संगठित करना एक अन्य कारण माना जाता है फिर भी कुछ विद्वानों ने से भारत के लिए जनकल्याण जानकारी एवं भारत की भौतिक प्रगति का साधन भी माना है

I. रेलवे

।।. सड़क मार्ग.

।।।. डाक व तार.

10. आधुनिक वित्तीय संस्थाओं का उदय. अंग्रेजी पूंजी निवेश से भारत में आधुनिक वित्तीय संस्थानों बैंकों बीमा कंपनियों आदि का विकास संभव हुआ इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा जो धन लगाया गया उसके पीछे भी उनका उद्देश्य भारतीय पूंजीपतियों पर अपना वर्चस्व स्थापित करना था तथा अधिक से अधिक लाभ कमाना था ब्रिटिश शासको के काल में भारत में चार प्रकार की वित्तीय संस्थाओं का उदय हुआ

11. भारतीय धन का अपव्यय. अंग्रेजी सरकारी शोषण के अनेक तरीके अपनाकर भारतीयों से खूब धन प्राप्त किया परंतु प्रशंसकों ने भारत से प्राप्त धन का दुरुपयोग किया भारत से वसूले गए भूमिकार का **90%** तथा अन्य कारों का **40** से **50%** सरकार सेवा पर खर्च करती थी जिसका उपयोग वह भारत की सुरक्षा के लिए नहीं करती थी अपितु एशिया चीन में अफ्रीका के उपनिवेश हथियाना के लिए करती थी तुलना करने से पता चलता है कि इंग्लैंड में सी पर

कारों का 90 19% जापान में 16% इटली में 13% ही सैनिक कार्यों पर खर्च होता था सेवा के बड़े अधिकारियों का जो अक्सर अंग्रेज होते थे अधिक वेतन दिया जाता था लॉर्ड मैकाले लिखा था कि मानवीय उनके धन बटोरने के तरीकों को देखकर मन काप पड़ता था और जबकि मितव्ययिता लोग उनके अपवय से आश्चर्यचकित रह जाते थे

12 भारत का आर्थिक एकीकरण. ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण भारत का आर्थिक की एकीकरण हुआ जिससे लोगों के सीमित सहयोग का अंत हो गया तथा देश का पूंजीवादी एकीकरण हुआ पूरे देश से कच्चा माल प्राप्त किया तथा संपूर्ण देश में एक समान चुंगी या भू राजस्व व्यवस्थाएं स्थापित की इन साधनों की सहायता से देश के विभिन्न भाग आपस में एक दूसरे से जुड़ गए ग्रामीण स्वास्थ्य के अंत के पश्चात देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों को परस्पर निर्भर होना पड़ा इस प्रकार अंग्रेजी नीतियों के कारण समूचा देश इंग्लैंड का उपनिवेश बन गया जिस देश का आर्थिक एकीकरण संभव हुआ

13. राजनीतिक चेतना. अंग्रेजी शासन की आर्थिक नीतियों के परिणाम स्वरूप जो आर्थिक एकता देश में मिली उसी से ही राजनीतिक चेतना का उद्भव हुआ अंग्रेजी नीतियों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का रूपांतरण औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में हो गया जिस देश में गहरा आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया इस गहराते आर्थिक संकट को भारतीय नेताओं ने अनुभव किया तथा उन्होंने इन नीतियों को जनता के सामने बड़े प्रभावशाली ढंग से रखा अंग्रेजी शासन की अन्यायपूर्ण एवं क्रूर नीतियों से तंग आकर किसानों ने भी अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अनेक विद्रोह किया उन्होंने सहयोग एवं भारत छोड़ो आंदोलन में बड़ी संख्या में भाग लेकर ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया इस प्रकार कहा जा सकता है साम्राज्यवादी सरकार की शोषणकारी आर्थिक नीतियों राष्ट्रीय भावना के दूध तथा राष्ट्रीय विकास का कारण बनी